समयसँ पहिने चेत किसान

समयसँ पहिने चेत किसान

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SAMAY SAN PAHINE CHET KISAN
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-29-3
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

पुरुखक भर

जेठ मासक समय। धरतीसँ आसमान धरि सतासीक बाढ़िमे जहिना पानिसँ ऊपर-नीचाँ एकरस भऽ गेल छल तहिना तापसँ तपिस समय एकरस भऽ गेल अछि। ओना, हवाक लहकीमे सुखाएल वादल एम्हर-ओम्हर कइये रहल अछि जइसँ धूप-छाँहीक खेल सेहो पसरले अछि।

मनक त्रास जहिना कम-बेसी भऽ रहल अछि तहिना देहोक त्रास कम-बेसी भइये रहल अछि। सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक बीचक सुवधी दादी लक्ष्मीपुर बाजारसँ घरपर ऐबते देखलैन जे पथार लागल काज अँगना-घरमे छिड़ियाएल अछि..!

पुतोहुजनी की करै छेली जे एना सभ किछु राइछित्ती भेल अछि, सभ काज जक-थक पड़ल अछि। अपन साधल जिनगी सुवधी दादीक छैन्हे, तँए तरे-तर मन बुमकलैन-

“जखन मनुक्ख छी तखन अपना भरे ने ठाढ़ हएब आकि अनका भरे कहियौ आकि पुरुखक भरे कहियौ, ठाढ़ हएब तँ नीक नहियेँ छी।”

केतौ आड़ि-धुरमे जहिना कोनो कारणे मोका फुटि जाइए आ बरखा होइते पानि बहए लगै छै तहिना सुवधी दादीकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे दससँ ऊपर एगारहक बीच समय भऽ गेल अछि, माल-जाल बहरेमे अछि, पानियोँ पीलक कि नहि पीलक, तैठाम जँ अनेरे तजियाक झड़नी जकाँ कठिया-लाड़ैन करब सेहो नीक नहि।

तरवन? तरवन तँ यएह ने नीक हएत जे निमूधन माल-जाल अछि ओकरा पहिने सम्हारी...।

बाजारसँ जहिना झोरामे चीज-वौस अनने छेली तहिना ओसारपर रखि सुवधी दादी गाइयक थैर दिस बढ़ली। थैर दिस बढ़िते माल-जालक नजैर सेहो सुवधी दादीपर पड़ल। सुवधी दादीकेँ देखिते माल-जाल बों-बाँ करए लगल। माल-जालक आवाज सुनि सुवधी दादी अपन मनक सभ थकान-पीड़ा बिसरए लगली।

दूटा दुधारू गाए अछि बाँकी एकटा गौड़ आ दूटा दुनू गाइयक बच्चा अछि। ओना, दुनू छोट बच्चाकेँ सुवधी दादी बाजार जाइयेकाल छाहैरिक गर धड़ा बान्हि देने छेली मुदा तैयो दुनू बच्चा सुधवी दादीकेँ देखिते डिरियाए लगल।

जेते काज सुवधी दादीक सोझहामे पड़लैन तेकरा देखि मनमे होनि जे जँ चारिटा हाथ-पएर रहैत तँ एक्केबेर सभ काज (माल-जालक, जेना- पानि पीआएब, नहाएब) सम्हारि घरमे (छाहैरमे) खाइले दैत बान्हि दीतिऐ मुदा से तँ अछि नहि, तरवन पहिने सभकेँ पानि पीआ नहौनाइ जरूरी अछि, पछाइत घरो करि देबै आ खाइयो-ले देबइ।

माल-जालकेँ सुवधी दादी पानि पीआइये रहल छेली कि पाछूए-सँ लगमे आबि बेटा–सिंहेसर–टोकलकैन-

“माए?”

बेटाक मुहसँ ‘माए’ सुनिते सुवधी दादी चौंकली।

ओना, सुवधी दादी सिंहेसरकेँ माल-जालक कोनो भार–जेना खेनाइ-पीनाइ, दुहनाइ-गारनाइसँ लऽ कऽ घर-बहार केनाइ धरिक काज–अपना जनैत नहियेँ देने छेलखिन। मुदा जरवन अपने नइ

रहब तखन तँ ओकरे सभकेँ माने बेटा-पुतोहुकेँ, ने सम्हारए पड़तै तँए जहिना पुतोहुपर तहिना बेटापर सुवधी दादीक मन गरमाइये गेल छेलैन मुदा बेटाक मुहसँ 'माए' सुनि सुवधी दादी अपन अतीतमे हेरा वौअए लगली।

लखनपुर गाम कोसी धारक कातमे पड़ैए। ओना, गाम होइत सेहो एकटा नासी[1] बहिते अछि मुदा से सालो भरि नहि, बरसातक समयसँ लऽ कऽ मात्र माघ-फागुन धरि बहैए, बाँकी समय सुखि जाइए। सुवधी दादी जखन दुरागमनक पछाइत लखनपुर- सासुर एली तखन अपन नैहर- रामपुर गाम मनमे नचलैन। उपरारि गाम रामपुर, तँए धार-धुरक केतौ दरस नहि, बाढ़ि सेहो नहियेँ अबैए। ओना, पानिक बहावकेँ बाढ़ि कहल जाइए, जे बरखो भेलापर पानिक होइए आ धारोक पानिक होइते अछि। ओना, धारोमे दुनू दिससँ पानि अबैए, माने बरखो भेलापर आ बर्फो पघिलने अबिते अछि।

सुवधी दादीकेँ एकेटा सन्तान–सिंहेसर–भेल रहैन, कातिक मास रहइ, धारमे डुमि गेने पतिक मृत्यु भऽ गेलैन। ओना, तइ समयमे ससुर जीबैत रहथिन। मात्र छह मासक सन्तानकेँ देखि मानवीय संकल्पकेँ दृढ़ शक्तिक संग सुवधी दादी मनमे रोपि लेलैन जे जीवित माता-पिता जकाँ बच्चाक पालन करब। पतिक अकाल मृत्यु सुवधी दादीकेँ जान पुरुखक खाली जगहकेँ भरैक एते शक्ति दऽ देलकैन।

जहिना सृष्टिक रचना पुरुख-नारीक बीच होइए तहिना सृष्टिक संचालन सेहो तँ दुनू कइये सकै छैथ। माने असगरो-असगर।

ससुरक परतापे सुवधी दादीकेँ लक्ष्मीपुरमे एकटा माड़बारी

[1] नासीक माने मुख्य धारक छाँड़ी धार

सेठसँ चिन्हा-परिचए भेलैन। सेठजी घीक कारोबारी। तीन पुस्तसँ ओइ सेठक परिवारसँ सुवधी दादीक परिवारक बीच आबा-जाहियो बनल रहल आ दुनू परिवारक बीच कहियो कारोबारमे लट्टी-घट्टी सेहो नहि बनलैन, जइसँ सम्बन्धमे कनियोँ कहियो कमी नइ भेल।

भाय, मनुक्ख छी! से चाहे बिहारक होइ आकि राजस्थानक, मुदा रहबाक तँ दुनू गोरेकेँ एकठाम अछि। हँ, परिवारक ढाँचागत जे किछु दूरी बनल अछि तेकरा तँ हमहीं-अहाँ ने सुगम बनबैत चलबै।

ओना, परिवार हुअए आकि गाम-समाज मुदा दू मनुक्खक बीचक जे बेवहार अछि ओ विषम परिस्थितिक बीचक समत्वक स्थिति छी किने, जइ बीच अनेको विघ्न-बाधा परिस्थितिवस सेहो होइए आ मनुक्ख-निरमित सेहो होइते अछि। परिस्थितिवसक विघ्न-बाधाकेँ लोक हँसैत टारि कऽ मेटा दइए, जेना बीस-पचीस बरख जे माए-बाप अपन बेटा-बेटीकेँ दूध-लाबा खुआ, आशाकेँ मनमे रोपि, माने अपनसँ अपन धरि, माता-पितासँ बेटा-बेटी धरि, सेवा करैए आ अनचोकेमे आकि कोनो कारणवश जँ ओ मरि जाइ छै, तेकरो तँ माए-बाप पनियाएल छातीकेँ सक्कत करैत-करैत सकताइये लइए, आ किछु दिन बीतला पछाइत मोन पड़लापर अपन कर्मपर हँसी सेहो अबिते छै जे भगवान हमर सुख हेरि लेलैन। भलेँ ओ हेरि किए ने लेलैन आकि हेरैक ताकमे होथि मुदा हमहूँ तँ वएह चेतन शक्ति छिऐ जे पुनः ओकरा हेरि कऽ लइये आनि सकै छी।

गाएकेँ पानि पीआ, घरमे आनि बान्हि कऽ खाइले देला पछाइत सुवधी दादीक मन थीर भेलैन। सिंहेसर चुपचाप ठाढ़ छल। काजक संग सुवधीक मनो हाथे जकाँ क्रियाशील छैन्हे। मनमे उठलैन लक्ष्मीपुर बाजारक सेठजी। तीन पुस्तसँ ओइ

परिवारसँ एतेक सम्बन्ध बनि गेल अछि जे परिवारक काज-उदममे आएबो-जाएब आ खाएनो-पीन अछिए। सुवधी दादीक मनमे किए उठितैन जे क्षेत्रक कारणे वा जातिक कारणे वा साम्प्रादायिक कारणे आनक कोन बात जे परिवारोमे पिता-पुत्रक बीच दूरी बनैक परिस्थिति बनियेँ रहल अछि।

जहिना दुर्गामैयाक आगू पुत्रवत् भक्त अपन मनकमना रखि अपन सुखद भविसक कल्पना करैए तहिना ने माँ दुर्गा अपन दसो हाथ उठा अनेको रंगक आसिरवचन दइते छैथ, भलेँ अपन दुर्गक दुर्गमतमक दुर्दशाक दुर्दिन चुपचाप अपन मनेमे किए ने रखि नेने होथु, तहिना सुवधी दादी अपन सभ सोग-पीड़ा बिसैर बेटाकेँ कहली-

“बौआ, दस हजार रुपैआ झोरामे छह। सेठजी कहै छेला जे जेना गाइयक सेवा करै छी तइसँ नीक जतन दऽ कऽ आरो करू। घीक मांगो आ भउओ अकास ठेकि रहल अछि।”

तैबीच कनसोह लैत सुकृत्तिया, सुवधी दादीक आगूमे आबि धमकली। ओना, चोरक मुँह चाम सन भइये जाइ छै, मुदा परिवारो तँ परिवारे छी किने। अपनाकेँ संयमित करैत सुवधी दादी बजली-

“कनियाँ! कोनो परिवारक सेखी ताबत धरि बढ़ैए जाबत धरि ओइ परिवारक लोकक सेखी बनल बढ़ैत रहैए।”

सभ दिन पुतोहुकेँ–सुकृत्तियाकेँ–सासुपर झपैट कऽ बजैक आदत भइये गेल छैन। पुतोहु बजली-

“से केना हएत?”

ओना, सुवधी दादीक मन चनैक कऽ चमैक गेल छेलैन जे ‘से केना हएत।’ एकर माने दुनू हएत। नइ बुझैक प्रक्रियामे बुझब हएत आ दोसर ईहो हएत जे ‘से केना हएत’ माने नइ हएत। मुदा

अपनाकेँ सम्हारि सुवधी दादी बजली-

"कनियाँ, जिनगीमे अखन तक कहाँ बुझि पेलिऐ जे पुरुख छी कि औरत। परिवारकेँ अपन तीर्थस्थल बुझि सभदिन ओहिना करैत आबि रहल छी जहिना अखनो करै छी। अहूँकेँ कहब जे पुरुखक भरे नहि अपना भरे उठि कऽ ठाढ़ होउ। नइ तँ दुनियाँक तेहेन हवा विसाएल बहि रहल अछि जे आँखि उठा मुँह तकिते रहब आ देह विषाक्त भऽ जाएत।"

तैबीच सिंहेसर बाजल-

"माए, आब मनो थीर भइये गेलौ। चल आब नहाइ-खाइले।"

सुवधी दादी-

"तूँ नहेलह?"

सिंहेसर-

"कहाँ, तोरे दुआरे अँटकल छी।"

सुवधी दादी-

"अच्छा चलै चलह।"

❑ *शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019*

भकमोड़मे पड़ि गेलौं

कलकत्तासँ परसूए गाम एलौं। बाहर रहने गाम अधबिसरू भइये गेल अछि जइसँ क्रियागत ढील-ढाल जीवनमे उतरिये गेल अछि। अधबिसरूक माने भेल जे गामक लोकसँ देहा-देही चिन्हा-परिचए बँचल अछि मुदा काज-उदेमक सम्बन्ध बिच्छिन्न भऽ गेल।

गामक लोकक प्रति ओहन उत्कण्ठा मनमे तेना भऽ कऽ नहि रहि गेल अछि जेना क्रियागत जिनगीक बीच होइ छइ। माने ई जे जखन कियो असगरो आ दोसराइत-तेसराइतिक संग सेहो काजसँ सटल रहल तखन काजक प्रति उत्कण्ठा जगिते अछि जे काज नीक हएत कि अधला हएत तैपर नजैर राखए पड़ैए। की लाभ सोचि केने छेलौं आ की नोकसान भेल, अही नफा-नोकसानपर जीवन ठाढ़ रहैए आ आगू-पाछू सेहो होइते रहैए...।

परसूए गाम एलौं, रस्ताक थाकल रहबे करी, ओही थकानक निशाँमे बारह घन्टा तक तेना सुतल रहि गेलौं जे दिन सुखे बीतल कि दुखे बीतल से बुझबे ने केलौं। मुदा तैसंग नीनो पड़ा गेल। घरपर असगरे नीके ने लगैत रहए। ओना, गाममे सभ परिवारसँ चिन्हो-परिचए अछिए। गाम दिस नजैर उठेलौं तँ बंशीधरपर नजैर पहुँचल। बिना किछु सोच-विचार केने बंशीधर ऐठाम विदा भेलौं।

बंशीधर घरपर भेट गेल। किछु अनभुआर जकाँ बंशीधरो हमरा लेल भइये गेल छल आ हमहूँ बंशीधर-ले सेहो भइये गेल छेलौं। मुदा तँए बंशीधर हमरा नइ चीन्हलक आकि हमहीं नइ

चिन्हलिऐ सेहो बात नहियेँ अछि। दरबज्जाक जे मर्यादा होइ छै ओइ अनुकूल बंशीधर बाजल-

"भाय, अहाँ सबहक समय-साल केहेन अछि। ऐठामक तँ देखिते छिऐ।"

अपना जनैत बंशीधर सभ बात बाजि गेल, मुदा अपनो किछु नहि बाजब सेहो केहेन होइत। बजलौं- "बंशी भाय, अपन परिवारक?"

'परिवार' सुनिते बंशीधर बाजल-

"भकमोड़मे पड़ि गेल छी।"

बंशीधर सिर्फ बी.ए. तकक स्कूले-कौलेजक संगीटा नहि छी, एकटा गामक समाज सेहो छी। एक टोल-पड़ोसक छी, एक जाइतिक संग दियादी परिवारक सेहो छीहे।

बंशीधरकेँ अपन पुस्तैनी सम्पैत–खेत-पथार–सेहो गुजर-बसर करै-जोकर छइहे, मुदा अपना मात्र गाममे घराड़ी आ घरटा अछि। जइसँ परिवार नोकरिहाराक बनि गेल अछि। बाबो नोकरी करैत जीवन गुदस केलैन आ तहिना पितो केलैन आ हमहूँ पचीस सालसँ कलकत्तामे रहै छी। ओना, परिवार–पत्नियोँ आ बच्चो–गामेमे रहैए। अनका जकाँ बाइली आमदनियोँ नहियेँ अछि, तँए कम खर्चक परिवार बनबैत गामेमे रखै छी। आजुक परिवेशमे गामो-घरमे चाह-पानक चलैन भइये गेल अछि। पहिने जकाँ तमाकुल आकि बीड़ीए-टा नहि रहि गेल अछि।

दरबज्जापर–बंशीधरक दरबज्जापर–दुनू गोरे बैस कऽ गप-सप्प शुरू केनहि रही कि बंशीधरक मझिली बेटी–सुवोधनी, जे मैट्रिकमे पढ़ैए, चाह नेने पहुँचल। चाह देखि बंशीधर बाजल-

"भाय, पानियोँ पीब?"

सुवोधनी चाहक गिलास आगूमे रखि चोट्टे घुमि आँगन चलि गेल। अपनो आँखि सुवोधनीकेँ देखिये नेने छल। अखन तकक जे नाप गाम-घरमे लड़की-बिआहक अछि ओइ अनुकूल सुवोधनी बिआह करै-जोकर भइये गेल अछि, मुदा बंशीधरक विचार पढ़ला पछाइत, स्कूल-कौलेज छोड़ला पछाइत बिआह करैक छै तँए अखन तक सुवोधनीक बिआहक चर्च ने बंशीधर उठौलक आ ने मनमे रखने अछि।

जहिना निर्भिक लोक काजकेँ क्रमानुसार एकक बाद दोसरकेँ पकैड़ करैत आगू बढ़ैए तहिना बंशीधरो अछिए। तीनटा बेटीमे जेठकी बेटीक बिआह कऽ चुकल अछि बाँकी मैझली आ छोटकी छइ। सुवोधनीक विषयमे बंशीधर किछु ने बाजल। माने, ने सुवोधनीक पढ़ै-लिखैक चर्च केलक आ ने बिआहे दानक चर्च केलक। जखन बंशीधर कोनो चर्च नहि केलक तखन आगू भऽ कऽ अपनो किछु बाजब नीक नहि बुझि पड़ल।

आजुक परिवेशमे समाजक बीच ‘कन्यादान’ साधारण काज नहि रहि गेल अछि। केतबो मनुक्खक बुधि-विवेक सकताएल किए ने हुअए मुदा बेटीक बिआह दिनो-दिन भारिये भेल जा रहल छइ। जखन कि बेटीक बिआह घर-घरक प्रमुख काज छीहे।

जहिया तक दुनू गोरे–हमहूँ आ बंशीधरो–गाममे रहि पढ़लौं-लिखलौं, तहिया तक जेना खुलि कऽ हृदयसँ गप-सप्प करै छेलौं से आब नहियेँ होइए। अनेरे किए कियो अपन दुख-बेथाकेँ अनका आगू छिड़ियौत, केकर के शुभचिन्तक छै जे केकरो दुख-बेथाकेँ बाँटत। जखन बरखा बरसैले आ ठनका खसैले मेघ तड़तड़ाइत रहैए तखन केकरा माथपर हाथ के दइ छै, सभ अपने-अपने माथपर हाथ दइत साहोर-साहोर करैए किने।

दुनू गोरेक बीचक–माने हमरो आ बंशीधरोक बीच–जिनगीक पतराइत सम्बन्धकेँ पुनर्जीवित करैत बजलौं-

“बंशीधर भाय! खेती-पथारीक की हाल-चाल अछि। कहैले ते हमहूँ कहै छिऐ जे किसाने-परिवारमे हमरो जन्म भेल आ हमहूँ किसाने छी, मुदा... ।”

हमर विचारक असर जेना बंशीधरक मन तक भेल। लगले बाजल- “मनमोहन भाय! जँ जड़ि खुनि देखी तँ अपना दुनू गोरेक सम्बन्ध गहींर तक अछि, मुदा... ।”

बजलौं-

“मुदा की?”

बंशीधर बाजल- “एक गाममे रहै छी, अपनो जनै छी आ समाजो जनैए, एक जातिमे दुनू गोरेक जन्मो भेल अछि, सेहो सभ जनैए, एक दियादी परिवारक छी सेहो सभ जनैए। खाली घर दुनू गोरेक दू टोलमे अछि, तेतबे ने। मुदा गाम छी गाममे अनेको टोलो अछि आ अनेको जातियो तँ अछिए।”

बंशीधरक विचारक प्रवाहमे अपने भँसि रहल छेलौं। एक तँ एकउमेरिया बंशीधर तैपर दुनू गोरेक बीच सम्बन्धक आड़ि-मेड़ वा सीमा-सरहद सेहो नव सिरासँ स्थापित करैक विचार मनमे अछिए। मुदा बिनु विचार केनहि- अपने मुहसँ खसि पड़ल-

“से तँ छीहे।”

जहिना तेज रफ्तारक गाड़ीमे ड्राइवर एकाएक ब्रेक लइए तहिना बंशीधर सेहो बोलीकेँ संयमित करैत बाजल- “मनमोहन भाय! सभ किछु एक रहितो दुनू गोरेक जीवन दू ढंगे बितै छह। जेना तोहर परिवार अपन श्रमशक्ति बेच, मजूरीपर ठाढ़ छह तेना हमर नहि ने अछि।”

बंशीधरक विचार जेना माथमे ठाँहि-दे लागल। मुदा जवाबे की दऽ सकै छिऐ। बजलौं- "से तँ अछिए।"

बंशीधर बाजल- "तोरा अपनो बुझि पड़ै छह आ हमहूँ देखि रहल छी जे हमरासँ तोहर रहनो-सहन आ देहो-दशा नीक छह।"

अपने मुहसँ जखन अपन दुर्दिन आ दुर्दशा निकलए लगै छै तखन जहिना पाथरो पघील पानि बनए लगैए तहिना भेल। बजलौं-

"भाय! की बाजल छेलह जे भकमोड़मे पड़ि गेलौं?"

बंशीधर बाजल- "मनमोहन भाय, तूँ ते कारखानाक ऑफिसमे नोकरी करै छह, निसचित दरमाहा बान्हल छल तँए तोहर बान्हल जिनगी छह मुदा हम तँ किसान छी। अनेको आफद-आसमानीक बीच रहैबला, तँए बान्हल नहियेँ अछि। हमर अन्ना-गाहींस जिनगी बनि गेल अछि।"

अखन तक जे बात सुननौं ने रही, तैपर विचारे की करितौं, जे बात बंशीधरक मुहेँ सुनि बिस्मित हुअ लगलौं। मुहसँ बजा गेल-

"तेकर उपाय?"

जहिना कोसी-कमलाक बान्ह वा छहर टुटने बान्हल पानि तहस-नँहस करैत आगू बढ़ैए तहिना बंशीधर बाजल- "भाय, जिनगीक हर क्षेत्रमे अराजकक स्थिति बनि गेल अछि। हमहीं किसान छी, बोरिंग-दमकल, कुट्टी-कट्टा मशीन, दौन करैबला थ्रेशर लेलौं। ओहिना तँ नहि भेल, खेत बेच कऽ कीनलौं, नीक जकाँ ओकरा चलेबो ने केने रही कि तेहेन-तेहेन नमहर मशीन आबि गेल जे सभ बेकार भऽ गेल। अही भकमोड़मे पड़ि गेल छी।"

ओना, सुनैक क्रममे रामायणिक बात जकाँ सुनि जरूर लेलौं मुदा जहिना रामायणी सभ कहै छैथ जे सौंसे रामायण पढ़ि गेलौं मुदा 'सीता केकर बौह' से बुझबे ने केलौं। किए तँ जहिना बौहुक

माने पत्नीक संग बेटियो होइ छै तहिना भेल।

भकमोड़ तँ कोनो रस्ता होइए, जिनगीमे तँ नइ होइए तखन बंशीधर एना किए बाजल? बोरिंग-दमकल लेलक, गाए-महींसकेँ कुट्टी खुआबैले कुट्टीकट्टा मशीन लेलक, रब्बी-राय वा धान-गहुम तैयार करैले थ्रेशर लेलक तइमे जिनगी केना भकमोड़मे पड़ि गेलइ? मनमे अनेको रंगक अनुमानित विचार उठए लगल। मुदा फेर हुअए जे अनुमान तँ अनुमान छी, सहियो भऽ सकैए आ गलतियो भइये सकैए। जखन गलतकेँ अगुआ किछु बाजब तखन ओ आरो बेसी गलत होइत जाएत। होइत-होइत तेते बेसी भऽ जाएत जे बेसम्हारो भऽ सकैए। तखन तँ आरो बेसी पहपैट हएत। तँए नीक हएत जे किए ने बंशीधरे-मुहेँ सुनि अपन बुद्धिबलक हिसाबसँ आगूक विचार करब। बजलौं- “की कहलिऐ भाय जे भकमोड़मे पड़ि गेलौं?”

जहिना कोनो बेथाएल मन अपन बेथित क्रियासँ बेवश भेल रहैए तहिना बंशीधरक मन सेहो बेवश भइये गेल अछि। भाय जीवन छी, ठठ्ठा थोड़े छी जे पीहकारी मारि हारि-जीत बुझि लेब।

रंग-बिरंगी पच्छिमी हवासँ जिनगी जहिना बोझिल भेल अछि तहिना जिनगीक क्रिया–जैपर जिनगी ठाढ़ अछि–सेहो भकमोड़मे पड़िये गेल अछि। एक दिस जहिना बंशीधर देखि रहल छल जे परिवारमे चारिटा बच्चाकेँ पढ़ाएब अछि, पढ़ेला पछाइत बिआह-दान करैत नव परिवारक सृजन करैक अछि, तहिना दोसर दिस जइ आमदनीपर परिवारक गाड़ी आगू मुहेँ ससरत ओ मरनशील भेल जा रहल अछि, तैबीच अपन अस्तित्वकेँ बँचा राखब बाल-बोधक खेल तँ छी नहि। मुदा तैबीच अपन हीन-दीन देखि बंशीधरक विचारक मोकड़ जेना फुटि गेल, बाजल-

“मनमोहन भाय! बाढ़ि-रौदीक इलाकामे अपना सभ छी। जे

साधारण आफत नहि, भारी आफत अछि। गामक-गाम नष्ट भऽ रहल अछि! तैठाम..?"

बाढ़ि-रौदीक हाल-चाल तँ रोडियो-अखबारमे जरूर सुनै-पढ़ै छी, मुदा आइ तक अपना भेँट नहि भेल अछि। संगी रहितो बंशीधर जेना बाढ़ि-रौदीक संग रहैत आएल अछि तेना तँ अपना संग नहियेँ अछि। रहबो केना करैत, नोकरी करै छी, बान्हल दरमाहा अछि, गनल परिवार अछि, ओइमे बान्हि जिनगीक गाड़ीकेँ घिचै छी, तखन ओहन आफतसँ भेँटे केना हएत। बंशीधरक समस्यापर विचार करै-जोकर अपनाकेँ नहि थाहि पेलौं। अपन पल्ला झाड़ैत बजलौं-

"भाय, अहीं सन-सन जीबठगर बले गाम अखनो ठाढ़ अछि नहि जँ हमरा सन-सन लोकक भाँजमे पड़ल रहैत तँ कहिया ने गाम उजैर कऽ आन गाममे मिलि गेल रहैत।"

विचारक कोनो रस नहि पेब बंशीधर बाजल-

"मनमोहन भाय, एक तँ समैयक गति भकमोड़ पैदा करैए, तैसंग मनुखोक किरदानी कम नहियेँ करैए, मुदा जहिना कहबी छै जे 'गाए-गौरुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान' तहिना जँ जन आ जनसत्ताक बीचक दूरी समतल भऽ जाए तँ अनेरे ने सभ भकमोड़ मेटा जाएत।"

❑ *शब्द संख्या : 1411, तिथि : 15 मई 2019*

अपन इमान मरि गेल

विधान सभा चुनावक परिणामक घोषणा होइते प्राण मोहनक मुहसँ अनायास निकलल-

“अपन इमान मरि गेल।”

कल्याणपुर गाममे जग मोहन आ प्राण मोहन नामक दूटा दोस्त। बच्चेसँ दुनू एकठाम रहि खेलेबो-धुपेबो करै छल आ जखन स्कूल जाइ-जोकर भेल तखन गामेक स्कूलमे संगे नामो लिखौलक। ओना, सरोजनी दादीक हिसाबे जग मोहन मास दिनक जेठ प्राण मोहनसँ अछि, मुदा दादीक बुझब अपने धरि रहि गेलैन। एक टोलमे दुनू गोरे–जग मोहनो आ प्राण मोहनो–क जन्म भेने आनो-आन बुझै छैथ जे जग मोहनक जन्म प्राण मोहनसँ पहिने भेल मुदा केकरो जन्म दिन किए कियो मोन राखत, एकाएकी सभ बिसैर गेल। बिसरैक दोसरो कारण भेलै जे पाँच बर्खक जखन दुनू भेल आ स्कूलमे नाओं लिखौलक तखन जग मोहनक पिता बुझै छला जे रजिष्टरमे उम्र कम दर्ज करौने जहिना समाजक किछु परिवारक लोकक समझ छैन, नोकरी-चाकरीमे लाभ होइत अछि। चाहे ओ सेवा निवृत्तिक होइ वा बहालीक। जइसँ एक किलासमे नाओं लिखौला पछातियो दुनूक उम्रमे दू सालक अन्तर भइये गेल। ओना, एक समाजक रहने भैंसुर-भावोक सम्बन्ध सेहो बनिते अछि, मुदा ओ समाजेक बीच रहैए। असलमे नोकरी-चाकरी वा सरकारी सुविधामे एहेन लाभ देखि पड़ैए।

चुनावक परिणाम सुनि जग मोहन बुझि गेल जे जिनगी भरीक संगी प्राण मोहन अपन इमान गमा धोखा देलक। मात्र डेढ़ साए भोँटसँ जग मोहन चुनाव हारल जे भोँट प्राण मोहनक भाँजक छल। ओना, दुनू एम.ए. तकक संगी छी, एकठाम रहि दुनू पढ़बो केलक आ बच्चेसँ दोस्ती, पहिने भैयारी पछाइत दोस्ती निमाहैत सेहो आएल। जहिना पढ़ै-लिखैमे एक-दोसरकेँ मदैत केलक तहिना मौका-कुमौकामे देहक कपड़ो-लत्ता आ पाइयो-कौड़ीक लेन-देनमे सेहो मदैत करिते आबि रहल छल।

जखन सी.एम. कौलेजमे पढ़ै छल तखन दुनू गोरे 'गंगा महात्म कथा' पढ़लक। कथा पढ़ला पछाइत दुनू गोरे डेढ़-दू घन्टा धरि तर्क-वितर्क सेहो केलक। मुदा तर्कों-वितर्क करैले मनक संतुलन अछिए, नइ तँ एकभग्गू तर्क-वितर्क भइये जाइए। किए तँ खसल जिनगीक खसल मनक आ उठल जिनगीक उठल मनक तर्को-वितर्क खसल-उठल भइये जाइए।

जहिना जीरो डिग्री अक्षांशपर कर्क-मकर रेखाक बीच विषुवत रेखा अवस्थित अछि तहिना मनक सेहो अछिए। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहअ।

जग मोहन आ प्राण मोहनक बीच से नइ रहल। दुनू गोरे एक विचारक सीमापर आबि निर्णय केलक जे 'गंगामे पैस जिनगी भरिक दोस्तीक व्रत लेब।' मुदा गंगोक महात्म तँ समैयक हिसाबसँ घटिते-बढ़िते अछि। फेर विचार केलक जे गंगा महात्मक बढ़ंत कातिक आ माघमे होइए बाँकी समय घटंतक छी। दुनू विचारि लेलक जे कातिकक पूर्णिमा दिन गंगामे पैस भरि देह नेहेबो करब आ दोस्तीक व्रत गंगा महरानीक हृदय स्थलमे लेबो करब। भने मास करैबला वा मास करैवाली सभ देखबे करता वा देखबे करती।

कौलेज छोड़ला पछाइत दुनू बेकती (जग मोहन-प्राण मोहन)

समाज सेवा दिस आगू बढ़ल। जे सोभाविको छल। एक तँ तुरत-तुरत देश आजाद भेल छल जइसँ समाजमे सेवाक भावना प्रवल छेलैहे। माने अंग्रेजी सत्तासँ मुक्ति भेटल छल, तैपर लड़ाइक दिवाना सबहक बढ़त समाजमे छेलैहे जइसँ देशक कल्याण केना हएत, एहेन विचार केनिहार लोकक बाहुल्य छेलैहे। भीखमंगा जकाँ नोकरी-चाकरी करैक मन लोकक नहि बनल छल। सुभ्यस्त परिवारमे दुनूक जन्म भेले छल, तँए जइ समाजमे खाइक अन्न नहि, पहिरैक वस्त्र नहि, रहैक घर नहि तइ समाजमे जँ कोनो परिवार पारजनसँ अपन आवश्यकताक पूर्ति करैए तँ ओ परिवार सुभ्यस्त भेबे कएल। अही तरहक परिवार दुनूक अछि।

कातिक मास अबैमे तीन-चारि मास बाँकी छल, तैबीच दुनूक मनमे अनेको तरहक विचारो आ विचारक शुभा-शुभो आ फला-फलो नाचिये रहल छल। कृष्ण-सुदामाक दोस्ती, सुग्रीव-रामक दोस्ती इत्यादि-इत्यादि छेलैहे। जहिना दरिद्र सुदामाकेँ कृष्णक मदैतसँ सभ किछु भेटल तहिना बालि सन दुष्ट भाइक बदला सेहो रामसँ दोस्ती भेने सुग्रीवोकेँ भेटबे कएल। ओना, सुग्रीव आ सुग्रीवक संगी-साथी भेटने रामोकेँ रावणक संग लड़ाइमे दोस्तीक लाभ भेबे केलैन।

आसीनक दुर्गापूजा बीतैत-बीतैत गामक लोकमे मास करैक–माने गंगा असनानक व्रत लइक–विचार जगिये चुकल छल। ओना, स्त्रीगणमे बेसी आ पुरुखमे कम लोकक मनमे मास करैक विचार जगिते अछि, तहिना अहू साल भेल। जग मोहनो आ प्राण मोहनोक विचार बनले छल जे ऐबेर कातिक पूर्णिमा दिन गंगा स्नानो करब आ दोस्तीक व्रत सेहो लेब।

ओना, कौलेजक बी.ए.क छात्र रहितो ने जग मोहने बुझै छल आ ने प्राण मोहने बुझै छल जे गंगाक महात्म, भाव-लोकक भाव

छी जे मनकेँ मोहित करैए। गंगा सन-सन धार, भौगोलिक दृष्टिसँ, दुनियाँमे अनेको अछि। जे लम्बाइ-चौड़ाइमे गंगासँ बीसो अछिए। ओना, सभ धार गंगासँ बीसे अछि सेहो बात नहियेँ अछि। छोट-क्षीण अनेको धार सेहो अछिए, जे कोनो-कोनो सालो भरि बहता रहैए आ कोनो-कोनो अधो-छिधो, आधा-छिधाक माने भेल चारि मास, छह मास बहैबला, आ कोनो-कोनो सुखलो तँ रहिते अछि। मुदा जे अछि जेतए अछि से तेतए रहअ, गंगा तँ एहेन धार अछिए जे सालो भरि बहतो रहैए आ पवित्र सेहो बनल रहिते अछि। ई दिगर बात भेल जहिना जीवात्मा[2]क लेल अछि तहिना मृत्यात्माक लेल सेहो अछिए। जेकर फलाफल सभ देखिते छी जे गंगालाभक नाओंपर सड़ल-गलल लहास गंगामे दहाइत रहैए।

जहिना दुर्गापूजाक संग कोजगरा होइत दिवाली, सामाक उजाहि लोकक मनमे, तहिना तुरत-तुरत बरखा मासक अन्त भेने गंगा अपन समृद्धितम रूपमे सेहो अनवरत बहिये रहली अछि, तहिना अगहन अपन धन-धान्यसँ भरल-पूरल खेत-पथार सेहो सजौनहि अछि, तहिना जग मोहनो आ प्राण मोहनोक बीच प्रगाढ़ दोस्तीक शुभ मुहूर्त, पूर्णिमा दिन गंगा असनानक संग जिनगीक धरा सेहो दुनूकेँ भेटैक सम्भावना सेहो अछिए।

गंगा असनान करैत दुनू गोरे प्रगाढ़ दोस्तीक व्रत लेलक। प्रगाढ़ दोस्ती भेल कोनो कार्यक व्रतक संकल्पक संग दोस्ती। से दुनूमे समाज सेवाक नाओंपर छेलैहे। ओना, कहबी छै जे भिनसुरके सूर्यसँ लोक दिन भरिक आकलन करैए। कौलेजे-जीवनसँ कौलेजक पठन-पाठनक बीच जे बाधा-रूकावट समस्या बनि ठाढ़ अछि ओइ सभ समस्याक समाधान लेल दुनू दोस्तक मन

[2] जीवित शरीरधारी आत्मा

तत्पर रहिते अछि। माने अवाज उठबैक संग सजा भोगैले सेहो तैयार रहिते अछि।

सौभरी ॠृषि जहिना जमुना नदीक बीच धारक अगम पानिमे तपस्या करै छला तहिना कौलेज छोड़ला पछाइत दुनू दोस्त सेहो समाजक बीच बहैत जमुना धारमे तपस्या करए लगल।

समय बीतैत गेल। कार्यक्षेत्र एक रहितो विचार क्षेत्रमे दुनूक दू दिशा भऽ गेल। जग मोहनक विचार वर्त्तमानपर भविसकेँ ठाढ़ हएब देखि रहल छल तँ प्राण मोहनक विचार अतीतमे अपन भविस देखि रहल छल। ओना, एहेन विचार मनक भीतर पनपल छल, मुदा बेवहारिक रूपमे समाजक एक जिनगी रहने मनुक्खक जे बुनियादी प्रश्न अछि, जे समाजक विचारकेँ, आजादीक लड़ाइ (1947 ई.) सँ पहिने, भविस दिस बढ़नुमा बनि गेल छल ओ अखनो भरपूर जीवित छेलैहे।

आजादीक पछाइत विचारमे मोड़ एने आमजनक जिनगीमे सेहो मोड़ आएल। आर्थिक उन्नैत भेने लोकक जिनगीमे थोड़-थाड़ उछाल सेहो एबे कएल। मुदा आजाद देशक जनगणक निर्माण जइ ढाँचापर हेबा चाहै छल तइमे कमी भेल आकि बेइमानी भेल, से नइ बुझै छी।

जेना-जेना प्राण मोहनक विचारधारा साम्प्रदायिक होइत गेल तेना-तेना जग मोहनसँ दोस्तीक दूरी सेहो बनैत गेल। मुदा लगक संगी वा समांग मरने लोककेँ जे नोकसान होइ छै से तँ जग मोहनोकेँ भेबे कएल। ओना, जग मोहन अपन जनगणक चाहत पहिनेसँ आरो बेसी उपारजित कइये नेने अछि। विधान सभा चुनाव जग मोहन लड़ल। जे डेढ़ साए भोँटसँ हारल।

❑ *शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019*

गामक रूप बदैल देब

आने गाम जकाँ मिथिलांचलमे कर्मपुर सेहो एकटा गाम अछि। जहिना सभ गामक लोको आ खेतो-पथार सभरंग अछि तहिना कर्मपुर गाममे सेहो अछि। जे सोभाविको अछि। किए तँ देखै छी जे जहिना बहता धारमे एकरंग बेग रहितो पानिक गहराइ केतौ कम्मो आ केतौ बेसियो रहिते अछि, तहिना पाथरक बनल पहाड़कैं सेहो देखै छी जे कोनो अंग बेसी ऊँचगरो आ बेसी सपाटो रहैए आ कोनो अंग नीचगरो आ उभरो-खाभर रहिते अछि। ई तँ भेल जे बेसी दिनसँ अछि, जे कमो दिनक अछि माने हाल-सालक तोहूमे एहेन विषमता आबिये जाइए। जेना देखै छी, जे एक्के दिनक रोपल गाछी-कलमक गाछ छोटो-पैघमे आ डारियो-पातमे अन्तर आनियेँ लइए। तहिना गामक एके बाधक खेत सेहो ऊपर-निच्चाँ रहिते अछि। कर्मपुरमे सेहो तहिना अछि।

जहिना क्रिया, वाणी आ विचारमे तल-विचल अछि तहिना रहैबला धारो, नहाइबला पोखैरियो आ उपजैबला खेतो-पथार अछिए। तहिना सभ समाजमे सेहो अछि। ऐठाम समाजक दोहरी माने अछि। पहिल, माइटिक बनल धरतीकेँ सीमा-सरहदमे बान्हि गाम मानल जाइए आ ओइमे बसनिहार गौंआँ कहियौ आकि समाज सेहो मानले जाइए। दोसर, गामक बीच सेहो अनेको समाज अछि। पढ़ल-लिखल लोकक समाज, डॉक्टरक समाज, ओकीलक समाज इत्यादि-इत्यादि। जहिना सभ रंगक सभ चीजमे अन्तर सभ गाममे अछि तहिना कर्मपुरमे सेहो अछि। अही कर्मभूमिमे अनेको

रंगक लोक अनेको धर्म, अनेको जाति आ अनेको सम्प्रदायिक संग बौक, बहीर, नाँगर-लुल्ह, जरल-अधमरल सेहो सभ अछिए। अही कर्मपुरमे पनरह बर्खक जरलाहा सेहो अछिए...। ओना, जखन खुशीलाल दुइये बर्खक छल, माने जरलाहाक छठियारक नाओं खुशीलाल छी, तखने चुल्हि लग माइयक संग बैस खेलै छल, माए सेहो भानसक संग बच्चो खेलबै छेली, तही बीचक घटना छी। चुल्हिक आगि जारनक संग बढ़ैत मुँहपर आबि गेल, श्यामा (माए) भतपसौना-ले दोसर दिस घुमि निहुरली कि खुशीलाल मुहेँ भरे आगिपर खसि पड़ल। गरदैनसँ ऊपर खुशीलाल जरि गेल। तहियेसँ खुशीलालकेँ हम जरलहे कहै छी।

बरसातक समय, बिनु बुझल बाढ़ि आबि गेल। बेपारीसँ लऽ कऽ गौंआँ-घरुआ धरि कियो ने बुझि पेलक जे अनायास एना एहत। तँए कियो सावधान नइ छल। बाढ़ि अबैसँ एक दिन पहिने जरलाहा पचास बोरा अल्लू ट्रकसँ आनि नेने छल।

अचानक बाढ़ि सुनि जरलाहा लग अपनो पहुँचलौं जे कमसँ कम खाइ-पीबैक पनरह दिनक ओरियान तँ कऽ लेब अछिए। बिपैत पड़लापर जहिना लोक बेवश भऽ पतितपनक सीमापर पहुँच जाइए, मुदा तैयो तँ अपन विचारकेँ ओइ पतितपनासँ लोक अपन परहेज करिते अछि। हमरा देखिते जरलाहा बाजल-

“काका, गोड़ लगै छी।”

‘काका गोड़ लगै छी’ सुनि मन झमान जकाँ झमैक उठल।

झमैक ई उठल जे जरलाहाकेँ गोड़ लगैक असीरवाद की देबइ। अखन एकाएक लोक बाढ़िक चपेटमे पड़ि गेल अछि तँए अनेको समस्या सोझहामे आबिये गेल अछि। मुदा गोड़ लगैक संग-संग जरलाहा हँसियो रहल छल..! भाय, असीरवादो दइमे

भगवानोकेँ ओइठाम ने हल्लुक होइ छैन जैठाम भक्तकेँ अभक्तक हँसी मुहसँ निकलैत रहैए। मुदा जैठाम से नइ रहल, तैठाम हुनको उकड़ू भइये जाइ छैन।

अपन उमेरकेँ अन्दाजमे रखि अपन बोलीकेँ ओही अनुकूल आकारमे गढ़ि बजलौं-

“आब कि काकाकेँ कोनो हूबा छैन जे बौआ कुछ असीरवाद देथुन। आब तँ तोरा सबहक गाम-घर भेलह, चाहे मन हुअ तँ रहए दिहह आ नइ तँ अही बाढ़िमे गरगोटिया दऽ कऽ डूमा दिहह।”

मात्र नाम-गाम लिखै धरिक लूरि जरलाहाकेँ छै, मुदा दिन-दिनक जिनगी ओकरा दीनानाथ जकाँ गढ़िये देने अछि। बाजल-

“काका, जाबे देहमे परान अछि ताबे अहाँ सन-सन लोककेँ थोड़े डूमए देब।”

जरलाहाक सहगर बात सुनि अपनो मन सहगर भेल। सहगर होइक कारण ईहो भेल जे अखन अगुआ कऽ आएल छी, जरलाहा अल्लूक बेपार करिते अछि, तँए अपन काज असानीसँ निपैट जाएत। भेल तँ पचीस किलो अल्लू लऽ लेब तँ कोनो धरानी काज चलिये जाएत।

किए तँ बाढ़ि देखि लोको ने अनेको रंगक जोगार करबे करत। अपना ई नइ बुझल छल जे जरलाहा पचास बोरा अल्लू घरमे रखने अछि। तेकर बुमकी मनमे छइ। होइतो अहिना छै जे एक्के मूसक खुनल एक्के रंगक बिलसँ जैठाम पानि पतराएल रहैए, तेकर बहैक बुमकी आ जैठाम पानि मोटाएल रहैए तेकर बुमकीमे जहिना तल-बिचल रहैए तहिना भऽ रहल छल। अपना मनमे नाचि रहल छल जे अनचोकमे बाढ़ि आबि गेल, केतेको घर कानत। मुदा जरलाहाक मन अल्लू देखि अगुआएल छल। बजलौं- “ऐबेर गामक

रूप विकृत्त भऽ बदैल जाएत।”

जरलाहाक चढ़ल मन रहबे करै, बाजल- “काका, गामक रूप बदैल देब। भने बेर पड़ल हेन।”

तही बीच जरलाहाक माए- श्यामा आबि धमकली। अबिते बेटाकेँ कहली-

“बौआ, भैयाकेँ जे खगता होनि से दिहौन।”

एक तँ जरलाहाक मन टोबि नेने छेलौं, तैपर ओकर माइयोक टोबा गेल। टोबटोबाइते अपन मन निसचिन्त भऽ गेल। बजलौं-

“जरलाहा सन-सन जँ दसोटा बेटा जइ गाममे जनैम जाए तँ ओइ गामक उद्धार भऽ जेतइ।”

ओना, ने आन माए जकाँ श्यामा अपन बेटाक नाओं ‘जरलाहा’ सुनि जरै छैथ आ ने अपनो ओहन बोले अछि जे लोकक अधला बाजी आ नीक नइ बाजी। तँए केतेको दिन ई बात बाजि चुकल छेलौं। गाम-समाजमे जँ एहेन धारणा प्रवल भऽ जाए तँ अनेरे गामक रूप-नक्शामे बदलाव एबे करत। अधला तँ सहजे अधला भेल जे नीकोकेँ अधला बना-बना लोक एक कानसँ अनेको कान धरि बाउग-बतियौन करिते अछि, जइसँ समाजमे अनेको विकृत्तता आबिये गेल अछि।

सात भाए-बहिनमे जरलाहा (माने खुशीलाल) छठम् नम्बरपर अछि। मात्र एकटा बहिन अपनासँ छोट छइ। अपन काज करैक लूरि जरलाहा भाएसँ सीखलक। बिनु खेत-पथारक परिवार सुबोधक अछि। अपने तँ सुबोध बहुत चुस्त नहियेँ अछि। मुदा श्यामाक चुस्तीसँ परिवार सामान्य रूपमे चलैत आबि रहल छइ।

काज करैक बलिहारी ओकर ई छै जे काजकेँ आगू बढ़बैत गेल। आगू काज बढ़िते, केराक पौंच जकाँ कहियौ आकि बाँसक

कोंपर जकाँ कहियौ, काजसँ काज कोंपरेबे करैए। तहिना जरलाहाकेँ सेहो भेल। भेल तँ जहिना बाँसक तीनसलिया उखारि दोसर बीट बढ़ौल जाइए, केराक तेसर पौंच उखारि बीट बढ़ौल जाइए तहिना ने बेकतियो आ समाजोक अछि। मुदा एकरंग सपाट विचार रहितो विपरीतार्थ सम्बन्ध अछि।

जहिना बाँसक पुरान बाँस उखारि बीट बढ़ौल जाइए तहिना केराक अग्रिम पौंच उखारि रोपि बीट बढ़ौल जाइए। यएह छी प्रकृत्ति आ प्रकृत्तिक नियम। जे अपना गतिये चलैत रहैए, ओइमे लोक अपन प्रकृत्तिक संग करैत आगू बढ़ैए।

ऐगला-पैछला सभ भाए-बहिनकेँ जरलाहा ऐ रूपेँ क्रियाशील बना लेलक अछि जेना दिन-रातिक गति होइए। दोकानपर सँ चल-चलाउ होइत बजलौं-

“बौआ, जँ बेर-बेर सम्हारि सकह तँ महिना दिनक भार लएह, नइ तँ पाँचो दिनक तँ भार उठेबह किने?”

जरलाहा बाजल-

“काका, जे खगता हुअए से बाजू। अपने ठेलापर दइयो आएब, नहि तँ हमरापर बिसवास हुअए ते जहिना सभ दिन लऽ जाइ छेलौं तहिना लिअ। एहेन-एहेन बाढ़िकेँ जरलाहा, जहिना अगस्त मुनि समुद्रकेँ पीब गेला, तहिना पीब कऽ पचा लेत।”

❑ *शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019*

कुभेला

जेठ मासक अन्हरिया पक्षक आइ तृतीया छी। नअ दिन पहिने गाममे जानकी नौमी धूम-धामसँ मनौल गेल। समैयक हिसाबसँ, माने भेल औझुका दिन, शीत-तापक दृष्टिसँ, ऐबेरक समय कुभँजगर अछि। किए तँ चैतेसँ मौसमक, रूप ऊपर चढ़ए लगल छल। ओना, बीच-बीचमे कहियोकाल उतरबो कएल, मुदा पुन: ओ अपन तापक ऊँचाइ छुबैत गेल। जइसँ समयाधिक परिवर्त्तन मौसममे अबैत गेल।

दस बजैत-बजैत लोक बाध-बोनसँ घर दिसक रस्ता पकड़ए लगैए। रस्ता-पेरा मरुभूमि जकाँ मरनासन्न बनए लगैए। मुदा ऐमे अपन कोन दोख, सोल्होअना भगवानक छिऐन। खाएर जे छिऐन ओ भक्तक संग अपन फरिछा लेता।

जीवनलाल काका विपरीत समय[3] रहितो अनुकूल बनाइये नेने छैथ। विपरीतक अनुकूल भेल आवश्यकतानुसार। माने ई जे जैठाम पानिक जोगार नइ अछि, तैठाम गरमी समयमे खेती सम्भव नइ हएत, मुदा जँ ओइठाम कृत्रिम ढंगसँ पानिक अभावक पूर्ति कएल जाएत तँ वएह ने भेल विपरीतकेँ अनुकूल बनाएब...।

भिनसुरका समय, तुरत-तुरत लोकसँ लऽ कऽ माल-जाल ओ चिड़ै-चुनमुनीक संग गाछ-वृक्ष सभ सेहो अन्हारसँ निकैल इजोतमे प्रवेश करबे केलक अछि। ओना, सूर्य सेहो धमैक गेल छला।

[3] मौसम

नित्य-कर्मसँ निवृत होइत चाह पीब पान खा जीवनलाल काका अपन कर्मभूमि दिस विदा हेबा-ले तैयार भेला।

विदा होइते मनमे उठलैन जे काल्हि तक घौड़मे पनरह हत्था केरा निकैल चुकल छल, यएह ने ओकर प्रसवक समय छी, तँए पहिने केरेक बगान जाएब। बगानक मुहेँपर केराक घौड़ ओहिना कोशा लागल लटकल अछि जहिना राज दरबारमे लगल रहैए।

एक तँ केराक अपन सुगन्धित पतियानी लगल फूल, तैपर पतियानीक-पतियानी लगल फड़ सजल, देखिते जीवनलाल कक्काक मन हलैस कऽ कलैश उठलैन। दुनू हाथ जोड़ि बजला-

“हे केरा! जे जिनगी सोचि अहाँकेँ अनने छेलौं आ अपन अस्त-व्यस्त जिनगी रहने काल्हि-धरि सेवा नहि दऽ पौने छेलौं, मुदा जहिना दिनक मारल जँ रातियोमे कियो अपन गन्तव्य स्थानपर पहुँच जाइए, तहिना हमरो भेल। जे अमृतमय जीवनक आशा मनमे रोपाएल छल जे क्रियागत रूप पकैड़ अपन धारणाकेँ धारमे बहबैत बहब, ओ आइ सही मिलल, ऐ लेल हम दोखी अपनाकेँ नइ बुझै छी, मुदा अहाँकेँ कुभेला नइ भेल सेहो केना नै नइ कहब।”

पचीस बरख पूर्व मिथिलांचलक धरतीपर केरलसँ केराक पौंच आनि जीवनलाल काका रोपलैन। अपने केरलसँ नइ अनने छला तँए केराक बुनियादी विचार–माने उपजौनिहारक अनुभव–सुनि तँ नहि, मुदा राजस्थानक एकटा केरा-प्रेमी बेकतीसँ गप-सप्प जरूर भेल छेलैन। सीमेन्ट कारखानाक हिस्सेदार ओ आदमी। जेहने जीबठगर विचार तेहने जीबठगर काजक जिनगियो निर्माण केनहि छैथ। राजस्थान सन जगह, जे जगह अजमेरक ठीक विपरीत परिस्थितिक अछि, तैबीच ओ अपन घरक चारूकात रंग-रंगक फलो आ फूलोक गाछसँ सजौनहि छैथ...।

उत्सपूर्ण हुनकर विचार आ अपन उत्सुक मनक मिलन भऽ गेलैन। पाँचटा पौंच ओ केरलसँ अनने छला जइमे ओ दूटा देलैन। दूटा ऐ दुआरे लेलैन जे जँ कहीं एकटा सुखि गेल तँ दोसरो तँ बँचि सकैए मुदा जँ दुनू सुखि गेल, तखन दोसरो कारणक सम्भावना बनियेँ जाइए। मुदा संगोग नीक रहलैन जीवनलाल कक्काक दुनू पौंच लागि गेलैन। वएह सिमेन्ट-कारखानाक मालिकक मुहेँ सुनने छला। ओ–वएह आदमी–कन्याकुमारी घुमैले गेल छला सहए अपना-ले अनने छला, तइमे सँ जीवनलाल काकाकेँ देलकैन। फलो-फलहरी आ फूलोक प्रिय छथिए। राजा-रजबारक फुलवारीमे घुमि, मालीसँ दोस्ती करैत, नीक-नीक फूलो आ फलोक बीज सम्भव भरि जेबीमे चोरा कऽ रखि अपन जीवन दर्शन दरसैबते छैथ। वएह केराक प्रशंसा करैत कहने रहैन-

“एक छीमी केरा एक बेकतीक जलपान भऽ सकैए।”

तैपर जीवनलाल काका पुछने रहथिन जे ‘एक घौड़मे छीमी केते होइए?’ तैपर कहने रहैन- “दू साएसँ ऊपर।”

अदौसँ मिथिलाक धरतीपर केराक पैदाइस होइत आबि रहल अछि। गुणानुकूल केराकेँ श्रेष्ठ फल बुझि धार्मिक सभ अनुष्ठानमे सगुनिया मानि सगुन रूपमे स्थान भेटले अछि।

केराक घौड़ देखि जीवनलाल कक्काक मनमे उठलैन जे ई तँ, माने केराक गाछ, वएह फलवृक्ष अछि जे अपना फलकेँ अपने सम्हारियो नहि राखि सकत। ओना, आइयो केराक घौड़मे दू-हत्था निकैल चुकल अछि, जखन कि आरो फल-फूल निकैलते छइ। आगू केते निकलत ओ तँ भविसमे अछि।

जहिना कोनो तेहेन खगता रहने लोक आन-आन खगता बिसैर जाइए तहिना जीवनलाल काकाकेँ सेहो भेलैन। आएल छला

केराक बगान देखए, मुदा प्रथमे गाछो आ फलोकेँ प्रस्वावस्थामे देखि आगूक सभ बिसैर गेला। चोट्टे घुमि कऽ जीवनलाल काका दरबज्जापर आबि बाँसक टोनकेँ हियाबए लगला जे ओहन टोनक सोंगर चाही जे केराक गाछ आ घौड़क बीचक सीमापर पड़इ, जइसँ दुनूक रक्षा हएत। ओना, सोंगर टेढ़ करि कऽ लगौल जाइए तँए नमहर तँ काजक भऽ सकैए मुदा छोटसँ काज नहि चलत...। तही बीच सुधिया काकी दरबज्जापर एली। बाँसक टोनकेँ निहारैत पतिकेँ देखि बजली- "भोरे-भोर लोक रामक नाम लइए आ अहाँ काजेकेँ हियाबै छी..!"

एक तँ भोरुका समय, दोसर पत्नीक प्रशंसा आ तेसर पचीस साल पूर्वक हेराएल अमृतमय फल देखि जीवनलाल कक्काक मन ओहिना उधिया गेलैन जहिना कोनो धार समुद्रमे मिलिते उधियाइत रहैए। बजला- "आइ पचीस बरख पूर्वक आश भरल जिनगी भेटल। बीचक पचीस बरख मनसँ हेरा गेल।"

सुधिया काकी कि बुझलैन से सुधिया काकी जानैथ, मुदा जवाबस्वरूप बजली- "पुरुखोकेँ कोनो ठेकान छै, करवन सींग कटा पड़ूं बनि जाएत आ करवन मोछ कट्टा मौगियाही चेहरा बना लेत।"

ओना, सुधिया काकी जइ रूपेँ उत्तरमे बाजल छेली तेकर प्रत्युत्तर जीवनलाल कक्काक मनमे उठलैन। मुदा लगले मन मनाही केलकैन जे काजक दौड़केँ बकतुतमे लगाएब उचित नहि, तँए अपन सभ विचारकेँ मोड़ैत जीवन लाल काका बजला-

"सालक एक साए दिन जलखैमे ओ चीज फलपान करब जे बहुत कम लोककेँ नसीव छइ। ओही नसीवकेँ जगबैक भाँज लगा रहल छी।"

भाय! एक चुटकी तमाकुल-ले तँ लोक खेखनियाँ करैए आ

ऐठाम तँ साए दिनक अमृत पान भेटैक सम्भावना अनभुआर जकाँ प्रवल भऽ रहल अछि..! जिज्ञासु जकाँ सुधिया काकी मुँह बाइब बजली- “से की?”

पत्नीक मुहसँ ‘से की’ सुनि जीवनलाल कक्काक मन ओहिना हेरा गेलैन जहिना किनको पनरह मिनटक समय सम्पूर्ण रामायणिक पाठमे हेरा जाइए। केतए-सँ शुरू करब आ केतए अन्त करब, प्रश्न उठब सोभाविके अछि। अपन अतीतकेँ पहाड़ी झरना जकाँ झड़झड़बैत जीवनलाल काका बजला- “अपना संग समाजो अछि, आ अपनो समाज बनि समाजक संगी सेहो छीहे, तँए समाजमे सामाजिकताक संग ने समाज बनि समाजमे मुँह देखाएब मुँहपुरुखी भेल।”

जीवनलाल कक्काक विचार सुधिया काकी अपन ठेकनाएल विचारमे ठेकान नहि बुझि पेब रहल छेली, मुदा मनमे खुदखुदी खुदैकते रहैन। बजली-

“एते खिस्सा-पिहानीक बेर अखन नहि अछि, अखन काजक बेर अछि, तँए खिस्सा-पिहानी साँझू-पहर जेते सुनेबाक हुअए से सुना देब।”

पत्नीक अकछाइत मनक सोल्होअना लाभ उठबैत जीवनलाल काका बजला-

“भने मोनो पाड़ि देलौं।”

‘भने मोनो पाड़ि देलौं’ सुनि जहिना सुधिया काकी अँगनमुँह भेली तहिना जीवनलाल काका सेहो बहरमुँह भेला...।

❑ *शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019*

देखौंस

रघुवीर बाबाकेँ गामेक नहि परोपट्टाक लोक जनै छैन जे एहेन पारखी अपन गामक कोन बात जे इलाकामे एको गोरे नइ छैथ। ओना, कहब जे गामो आ इलाकोक सभ ई बात, माने पारखी दृष्टि, बुझै छैन आकि परखनिहारेटा बुझै छैन। भाय! जखन जीवनधारी मनुक्ख धरतीपर सभ दिन एबो करैए आ जेबो करैए तखन सभ एकरंग केना हएब। एकर माने ईहो नहि जे, जे रंग धड़ए चाहैए ओ नइ भऽ सकैए। भैयो तँ सकिते अछि।

अस्सी बरख बीतला पछाइत रघुवीर बाबा जखन अपन जन्मकुण्डली देखलैन तखन एकाएक मनमे एलैन जे पहिलुका लोक ने साए बरख जीबैक अपन अँटकार लगबै छला, मुदा आजुक समयमे अस्सी बरख जीब लेब, वएह बहुत भेल आ नीको भेल। किए तँ बेटा-पुतोहुक एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे अस्सी बर्खसँ बेसी जीबैक माने भेल गुँहगिज्जा जिनगी जीब। खाएर जे अछि ओ जीबैबला अपन विचारि लेता।

अस्सी बरख-उमेर टपला पछाइत रघुवीर बाबाक मनमे उठलैन जे स्वावलम्बी जीवनक सूत्र पकैड़ अपने अखन तक–माने एकासीम बर्खक बीच–अचैनसँ चैन आ अशान्तसँ शान्त जीवन बेतीत करबे केलौं हेन, तैसंग सभ दिन पढ़बो-लिखबो केलौं आ जिनगीक सुतिहार लोकक बीच बैस सुतपनो बनबैत निमाहैत रहलौं। अपने जकाँ सभ थोड़े अछि। रहबो केना करत?

जहिना सुतपन लग बैसने माने एकठाम बैस गप-सप्प केने, सुतपनो बढ़ैए तहिना नइ बैसने घटबो वा ठमकबो करिते अछि। तेतबे किए सुतपनो कि कोनो एक्के रंगक होइए आकि ओहो सभ रंग होइते अछि। लालो होइए, कारियो होइए, हरियरो होइए आ उजरो तँ होइते अछि। जहिना नीको होइए तहिना अधलो तँ होइते अछि।

एकाएक रघुवीर बाबाक मन तुरुछलैन। तुरुछैक कारण भेलैन जे अनेरे मनोकेँ वौआबै छी आ अपनो वौआइ छी। जखन जनिते छी जे दुनियाँमे जेते लोक अछि तेते दुनियोँ अछिए। सभकेँ अपन-अपन दुनियोँ छै आ दुनियाँ गढ़ैक हाथ-पैरक संग मन-बुधि सेहो अछिए।

अपन वौआएल मनक विचारकेँ विचारक बान्ह बान्हि रघुवीर बाबा अपन दुनियाँ दिस मोड़लैन। मुड़िते मनमे उठलैन जे एहेन सुनर दुनियाँ बनेलौं, उमेरक सीमा पार कऽ रहल छी, आब ऐ दुनियाँकेँ के देखत, आकि अपना संग दुनियाँक सभ किछु, नट-बक्खो जकाँ, घोड़ा-घोड़ीपर लादि नेने जाएब?

अपन विचारवान जिनगीक विचार कर्मवान जिनगीक इमानपूर्ण कर्म आ विवेकवानक वाणि जखन रघुवीर बाबा चलौलैन तँ देखलैन जे आगू नहि बढ़ि पाछू पड़ि रहल छी। अनाड़ी-धुनाड़ी राही-बटोही छलांग मारि-मारि आगू बढ़ि रहल अछि आ अपने ओहिना जकथकाएल छी। एकाएक रघुवीर बाबाक मनमे उठलैन जे जइ सुदीर्घ संकल्पक संग जिनगीक निर्माण करए चाहलौं ओ तँ अछिए! तखन पछुएलौं केना? जीवनधारमे अहिना धारवाह अबैत-जाइत रहिते अछि...।

रघुवीर बाबाक मनक आशान्त चित्तमे चैन एलैन। चैन अबिते मन खाली-खाली हुअ लगलैन। जहिना पोखैर वा इनार वा बाल्टीमे कोनो बर्तनसँ जखने पानि निकालब आकि शेष पानि

अपन खालीपनकेँ दूर करैए तहिना रघुवीर बाबाकेँ संजोग बनलैन। तहीकाल गौरीनाथ बाजार जाइ छल, जे रघुवीर बाबाकेँ दरबज्जापर असगरे बैसल देखि साइकिल रोकि बाजल-

"गोड़ लगै छी बाबा!"

ओना, रघुवीर बाबासँ पूर्ण प्रेरित गौरीनाथ, मुदा जहिना अपनो श्रेष्ठजन समांग लग कनिष्ठजन समांग किछु करबोसँ आ किछु बजबोसँ धकमकाइत रहैए तहिना गौरीनाथोकेँ थोड़-थाड़ धकमकी रहिते छइ। गौरीनाथक धकमकी देखि रघुवीर बाबा असीरवाद दैत बजला-

"गौरी! आब हम चल-चलौ छिअ, तँए मनमे एकटा विचार उपकल अछि, से..?"

सोल्होअना अनुकरण करैबला गौरीनाथ रघुवीर बाबाक अछिए। बाबाक बात कानमे पड़िते गौरीनाथ चौंकल। चौंकैक कारण भेलै जे जखन रघुवीर बाबाक काजो आ विचारो मानि चलिते छी तखन जँ कोनो विचार मनमे दबल छैन, ओहो बुझि लेब ने नीक हएत। ओहुना देखिते छी जे अपन उमेर पैंतालीस-पचासक बीच हएत, जखन कि रघुवीर बाबाकेँ अस्सी-नब्बे बर्खक बीच छैन्हे। तैबीच जँ सभ बात नहियोँ कहलैन वा मनमे दबाएलो रहलैन तँ उचिते भेल। ओहुना सभ बुझिते छी जे दोबर उम्रक अन्तर दुनू गोरेक बीच अछिए। मुदा तइमे एते अन्तर तँ होइते अछि जे जइ काजमे लोक जेते समय लगबैए, ओइ काजमे ओते समय लगबे करत। किए तँ कर्मधार आ विचारधारक प्रवाहमे अन्तर होइते अछि। जइ गतिये विचारधार बहैए ओइ गतिये कर्मधार नइ बहैए।

गौरीनाथ बाजल-

"बाबा, से कहिया-ले रखने छी?"

गौरीनाथक बात सुनि रघुवीर बाबाक मन झमकलैन। झमकैक कारण भेलैन जे अपने मन चौंकैत कहलकैन जे गौरीनाथ भरिसक ऐगला सीमा[4] अँकैत बाजल अछि। किए तँ गौरीनाथ अनका जकाँ कि ढहलेल-बकलेल अछि जे जे मनमे फुरतै से बकैत जाएत। ओ तँ अपन विचारकेँ अपना धरतीपर उतारि चलैबला अछि, जे सभ देखै छै, तैबीच जँ कियो अपन मन बलुआ अनका आँखिमे बालु फेकते से थोड़े मानल जाएत...। रघुवीर बाबा बजला-

"बौआ, आब चल-चलौ छिअ तँए जे घटी-बढ़ी भेल हुअ से बिसैर जइहह।"

जहिना रोगीकेँ उचित दबाइ नइ भेटने दबाइये अवघात करैए तहिना गौरीनाथोकेँ भेल। अवघातक पीड़ासँ जहिना रोगीक आवाज बदैल जाइ छै तहिना गौरीनाथोकेँ भेल। बाजल-

"बाबा, दुनियाँ जे कहै मुदा हम थोड़े मानब जे अहाँसँ बढ़ी छोड़ि घटी भेल। दुनियाँ बहुमुहाँ अछि, करवन कि बाजत से अपनो ठेकान नइ रहै छइ।"

गौरीनाथक बात सुनि अपना मनमे जे रघुवीर बाबाकेँ छेलैन जे जाबे लोक दुनियाँकेँ गड़ियाएत[5] नहि ताबे दुनियाँ अपन थाह लागए देत। भेल तँ अपनाकेँ पहिने थाहि लिअ, दुनियाँ थहा जाएत, नइ जँ दुनियाँकेँ थाहि अपनाकेँ थाहए चाहब तँ अनेरे अथाहमे पड़ि वौआ जाएब...।

रघुवीर बाबा बजला-

"से तँ ठीके कहै छह गौरी, मुदा?"

---

[4] जिनगीक अन्तिम छोर

[5] गहराइसँ पकड़क

रघुवीर बाबाक मुँहक बोलीक मिड़मिड़ी गौरीनाथक मनमे जेना चिड़चिड़ी लगा देलक तहिना चिड़चिड़ाइत बाजल-

“बाबा, अपन माए-बाप स्कूल नहि देखा पौलैन। अभाव दुनू दिस छल, माने स्कूलो नइ छल आ स्कूल जाइ-जोकर परिवारक स्थितो नइ छल। हजारो बर्खक प्रवासी शासकक हाथमे राजसत्ता रहल। ओहो तँ अहीं परसादे ने जहलमे भेटल।”

रघुवीर बाबा जेना बिसैर गेल छला तहिना बजला-

“की जहलमे कहलहक?”

मोन पाड़ैत गौरीनाथ बाजल-

“दुनू बापूत जखन जहलमे रही, तखन अहीं ने जेलरकेँ सिलेट-पेंसील आनि कऽ अ, आ सँ सिखेलौं।”

रघुवीर बाबाक मन पैछला बात सुनि अकछए लगलैन, जे गौरीनाथ बुझि गेल। बाजल-

“बाबा, अहींक देखौंससँ आइ हमहूँ अपनाकेँ किसान बुझै छी। अखन हमहूँ औगुताएल छी। कनी खाद-बीआ-ले बजार जाइ छी। नइ तँ एक-एककेँ सभ गनबैत मोन पाड़ि देतौं।”

“बेस जाह। मुदा जाबे आँखि तकै छी आकि तकै छह ताबे देखैत-सुनैत रहिहह।”

❑ *शब्द संख्या : 945, तिथि : 23 मई 2019*

समयसँ पहिने चेत किसान

अखन तक दुनियाँक इतिहासमे आजुक समय सभसँ बेसी सम्पन्न भेबे कएल अछि। जहिना आर्थिक क्षेत्रमे तहिना बौद्धिक क्षेत्रमे सेहो भेबे कएल अछि।

तँए कहब जे सामरिक क्षेत्रमे नहि भेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो भेबे कएल अछि। जेकर फलाफल देखिते छी जे देशक-देश मेटेबो करैए आ देशक-देश समृद्धिसँ समृद्धितम बनियोँ रहल अछिए। तही बीचमे ने बेरोजगारी सेहो एतेक बढ़िये गेल अछि जेते आइ धरिक इतिहासमे कहियो ने भेल अछि। खाएर जेतए जे भेल अछि से तेतए रहअ। ..ठनका ठनकै छै ते कियो अपन माथपर हाथ रखि साहोर-साहोर करैए। यएह सोचि बी.ए. केलाक पछाइत अपनो मनमे उठल जे किछु करक चाही। मुदा रोजगार तँ शहर-बाजार पकैड़ लेलक अछि, तइले गाम छोड़ि जाइये पड़त। जखने अपन रोजगार-ले शहर-बाजार जाएब तखने परिवारक संग गामो-समाजकेँ छोड़ि जाइये पड़त। जखन सभ किछु छोड़ि गामसँ चलि जाएब तखन जिनगीक मोले की रहल। जिनगीक मोल तँ तखन ने होइए जखन अपना संग परिवारो आ समाजोक बीच किछु करैक अवसर भेटए आ किछु करी। मुदा से बाहर गेने भेटत नहि, तँए मन घुरियाइत-घुरियाइत मानि लेलक जे गामेमे किछु रोजगारक उपाय करब।

अखन धरिक जे परिवारो आ समाजोक स्थिति रहल ओ मरनासन्न रहल जेकर फलाफल सभ देखिते छी। एहेन मरनासन्न

स्थितिक परिवारो आ समाजोक बीच केना जीवनमे जान औत? प्रश्न जे सोझामे आबि ठाढ़ भेल ओ पर्वतनुमा विकराल अछिए। मुदा केतबो विकराल किए ने देखि पड़ए, मनुखो तँ मनुक्ख छी। ओकरो तँ एते बुझए अबिते छै जे दुनियाँक पर्वत ढाहबसँ नीक अपन जीवन पर्वतकेँ ढहनेसँ लोककेँ भेटतो अछि आ भेटबो करत...।

मन घुमल, माने गाम दिस बढ़ल। गाम दिस बढ़िते मनसँ मेटाए लगल जे कल-कारखाना आ आनो-आन उद्योग सिमटा कऽ खास जगहपर एकत्रित भऽ गेल अछि तँए ओइठाम काजक बढ़ोत्तरी भेने रोजगारक बढ़ोत्तरी अछि। गाममे से नहि अछि। गाममे प्राचीन[6] पद्धतिक किसानी जिनगी अखनो अछिए। ओना, एहेन रहैक एक्केटा कारण नहि अछि, अनेको कारण अछि। खाएर जे अछि, कियो पहिने अपना-ले सोचत आकि करत तखन ने ओकर देखो-देखी आ सिखो-सिखीसँ सामाजिकताक जन्म हएत जइसँ समाजमे गतिशीलता औत।

समयो मोड़पर आबिये गेल अछि तँए मोड़ पकैड़ मुड़ैक सम्भावना सेहो बनियेँ गेल अछि। बैंक सभ गामो-घर दिस बढ़बे कएल अछि, तँए कम बियाजपर–कम बियाजक माने गाम-घरमे जे सूदि-सवाइक चलैन छल तइ अनुपातमे–काजमे सहयोग करैले आर्थिक मदत दइले तैयार भेल अछि।

जाबे बैंक गाम-घर दिस नइ छल ताबे जे आर्थिक समस्या छल ओ आब नइ रहत।

कोनो काज शुरू करैसँ पहिने एते तँ मनमे रोपि लिअ पड़ै छै जे जइ काज दिस डेग उठाएब, ओकर जे लक्ष्य छै तइ सीमापर

---

[6] पुरान

पहुँच सकी। ई नहि जे बैंकक सहयोगकेँ भीखमंगाक भीख जकाँ सोल्होअना साफ कऽ दिऐ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, आरो ई अछि जे बैंक अपन विचारानुकूल सहायता करैए आकि मदद लेनिहारक विचारानुकूल मदैत करैए? किए तँ मदैतियो-मदैतिक अपन-अपन जगह अछि, कोन जगहपर केहेन मदैतिक खगता होइए आ केहेन मदैत भेट रहल अछि...। ई तँ नहि ने जे कियो धारमे डुमैत हुअ आ ओकरा पुछिऐ जे 'भाय, की खाइक मदैत करियह..?'

किसान परिवारमे जन्म आ पालन-पोसन भेने किसानी संस्कृतियो आ संस्कारो रग-रगमे समाएल अछिए तँए किसानी वृत्तिसँ जुड़ल कारोबार दिस मन बढ़ल। जखने आगू बढ़ैक विचार जगल तखने सभ किछु अगुआ कऽ बुझौ पड़त आ करौ पड़बे करत। मुदा दुनियाँ तँ विश्वविद्यालय सेहो छीहे। केतौ नव-नव काज खोदि-खोदि निकालल जाइए तँ केतौ पहिलुके काजकेँ नीक बनौल जाइए इत्यादि...।

मनमे उठल जे पहिने अपन काजक (रोजगारक) बीआ मनमे रोइप ली, पछाइत विचारवान काज केनिहारसँ पुछि लिऐन। पछाइत जँ मनमे जँचत तखन डेग उठाएब।

परसू लालमोहन भाय गाम एला। बच्चेसँ सहयोगक भावना हुनकामे सेहो रहलैन आ अपनो अपन नापल-जोखल जिनगी जीविये रहल छैथ। लालमोहन भाय ऐठाम विदा भेलौं।

लालमोहन भाय बजन्ता लोक छथिए। तीन-चारि गोरेक संग बैस किछु बाजिये रहल छला कि इशारासँ प्रणाम केलिऐन। ओना, असीरवाद ओहो देलैन इशारेसँ मुदा अपन बाजब रोकि बजला-

"आगूमे बैसह।"

बैसते दोहरा देलैन- “किमहर-किमहर फिरंगी?”

असगरे लालमोहन भाय रहितैथ तँ निधोखसँ बजितौं मुदा चारि गोरेक बीचक बात तँ ओहन ने हेबा चाही जइसँ चारू गोरेकेँ लाभो हुअए। किए कियो हमर बात सुनता आकि हमहीं किए हुनकर समय नष्ट करबैन। बजलौं-

“भाय साहैब, केरा खेती करैक विचार मनमे आबि रहल अछि। सएह किछु बुझैक विचारसँ एलौं हेन।”

‘केरा खेती’ सुनिते लालमोहन भाय चौंकला। आश्चर्यसँ नहि चौंकला, चाँकिसँ चौंकला। चौंकिते बजला-

“बहुत नीक विचार फिरंगी तोरा मनमे एलह अछि। सोल्होअना अपन विचार तोरा दइ छिअ जे जखन मनमे एलह तखन शुभ काजमे बिलम करब बुड़िपना हएत।”

लालमोहन भाइक विचार सुनि मनक विचार आरो मजगूत भेल मुदा ई तँ भेल काज करैले, मुदा काजक प्रक्रिया की हएत से तँ बुझबे ने केलौं। जखन कि वएह बुझैक खियालसँ आएल छी। बजलौं-

“भाय, अहाँ जेते बुझै छी, जइ अनुकूल विचार देलौं, तेते अपने थोड़े बुझै छी जे लगले काजमे हाथ लगा देब। पहिने नीक जकाँ ओकर[7] जानकारी लऽ लेब, तेकर पछातिये ने काजमे हाथ लगाएब।”

हमर विचार लालमोहन भायकेँ जँचलैन। जँचिते थोड़ेक ठमकला। ठमकल देखि फेर बजलौं- “लालमोहन भाय! चुप रहने नइ हएत। कोनो काज करैसँ पूर्व ‘हँ-नइ’मे जवाब देब एक बात

[7] काजक

भेल, मुदा ओइमे गम्भीरता तरवन ने अबैए जखन ओकर ऐतिहासिक प्रक्रिया, माने काज करैक ऐतिहासिक तरीका, आ तैसंग वर्त्तमान-भविसक प्रक्रियाक पथ सेहो मनमे झलकए लगइ।"

हमर बात सुनि लालमोहन भाय गम्भीर होइत मुस्कियेला। ओना, हुनकर मुस्कीमे कि रहस्य छेलैन से तँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं मुदा अपना बुझि पड़ल जे मन खुशी छैन तँए मुस्कियाए लगला अछि। तइ बीचमे तीनू-चारू गोरे जे बैसल छला ओइमे सँ एकगोरे बजला-

"आबक समय तँ केराक लेल अनुकूल भइये गेल अछि तँए भविस नीक छइहे।"

गोल-मटोल विचार अपना बुझि पड़ल। कोनो विचारकेँ मनक तरजूपर[8] पहिने तौल लेब नीक होइए। तँए बजलौं-

"की नीक भविस कहलिऐ?"

ओ आदमी बजला-

"केरा नीक भोज्य पदार्थ छी, ओना नीको वस्तु सभ-ले नीके नहियोँ होइए, केकरो-ले अधलो हेबे करैए, मुदा जे समय आबि गेल अछि वा आबि रहल अछि, तइ मानेमे नीक अछिए।"

ओ आदमी अपना मने की बुझि बाजि रहल छला आ अपने की बुझए चाहै छेलौं, तइ विचारक कोनो जवाब नहि देखि बजलौं-

"से केना?"

ओ बजला-

"एक दिस लोकक आर्थिक विकास भेने भोजनमे सेहो उन्नैत भेल अछि। माने जीबैले अन-पानि, फल-फूल-पत्ता लोक खाइते-

[8] कसौटीपर

पीबिते अछि, मुदा जीवन जीबैले पौष्टिक भोजनक जरूरत अछिए, तहू खियालसँ आ तेते ने देवी-देवताक पूजा-पाठक संग उपास केनिहारिसँ सहनिहारि धरिक फलहार कहियौ कि अल्पाहार, तहूमे जरूरत बढ़िये गेल अछि।”

ओइ आदमीक विचारसँ केराक बाजारक पता कनी-मनी लगिये गेल मुदा अखन तँ हम खेती करैयेक विचार लइले ने आएल छी। सोचिये रहल छेलौं कि तइ बिच्चेमे दोसर आदमी ओकरा चोहटैत बाजल-

“लालमोहन भाय जेते देखलैन अछि, तेते तूँ थोड़े देखलह हेन। मनमे हमरो ‘केरा खेती’ करैक विचार होइए, तँए लालमोहन भायकेँ बाजए दहुन।”

‘केरा खेती’ करैमे लालमोहन भाय असफल भइये चुकल छैथ, तँए सफलक आशा मनमे नइ छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि। अही सफल-असफलक बीच मनुक्खक किरदानी अछि। अही किरदानीपर लालमोहन भाइक मन अँटकल छेलैन तँए मने-मन सोचि-विचारि रहल छला जे नव पीढ़ीकेँ केना बुझौल जाए।

ओना, अपनो मन रंग-रंगक विचार सुनि चौराएले जाइ छल मुदा ईहो होइ छल जे भाय पहिने बेटा जनमा पालन-पोषण करब आकि मूड़न वा बिआहमे रण्डी नचबैक विचार करब। अखन तँ केराक खेती शुरू केना करब, मूल प्रश्न ई अछि।

अपन अनुभव व्यक्त करैत लालमोहन भाय जिज्ञासा आ ओकर फलाफल एक्के संग रखैत बजला-

“फिरंगी बौआ, ओही केरा खेतीक फल अपने भोगि रहल छी, जे दस बर्खक मुम्बइमे नोकरी केलाक पछाइत बैंक लोनसँ छुटकारा भेटल।”

खेतमे जहिना रंग-रंगक माने किस्म-किस्मक, बीज एकसंग बाउग भेने रंग-रंगक गाछ जनमने अनाड़ीकेँ चिन्हब कठिन भइये जाइए जे कोन गाछ कथीक छिऐ, तहिना मनमे भेल। बजलौं-

“भाय सहैब, ने जिनगी आइये अन्त होइए आ ने अपने अन्त होइ छी जे धड़फड़ी रहत। अखन जे खगता अछि तेतबे कहू।”

अपन हृदय खोलि लालमोहन भाय बजला-

“फिरंगी! ‘केरा खेती’ ओहन खेतमे होइए जइमे पानिक जमाव नइ होइ। अपना ओहन खेत नहि छल मुदा मनमे खेती करैक जिज्ञासा तँ छेलए-हे।”

“तखन?”

“बैंकक मैनेजरसँ सभ विचार करैत योजना बनेलौं। दू बीघा खेत पाँच बर्खक लीजपर लेलौं। वोरिंग गड़ेलौं, दमकल लेलौं आ अपन जेते काजक समयकेँ छल, सभ लगेलौं। मुदा असफल भऽ गेलौं..!”

एकाएक हकासल-पियासल जिज्ञासा जगल। बजलौं-

“से की भाय साहैब?”

लालमोहन भाय बजला-

“बौना किस्मक जे केरा अछि, ओकरा बिना जँचने-परखने खेती केलौं। जे जाड़क मासमे सभ घौड़ घोघेमे लटैक गेल। जइसँ खेती मरा गेल।”

❑ *शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019*

काजक मेहपन

आधा जेठ बित गेल मुदा आन साल जकाँ ने कहियो लू-ए चलल आ ने एक्कोटा बिहड़ियो बरखा भेल। मुदा तैयो ऐ बेरक समय सभ सालसँ नीक अछिए। सभ सालक माने भेल, गोटे साल हवा-बिहाड़ि नइ भेने गरमीक प्रचण्ड समय बनि जाइए, ने सएह भेल आ ने पानि-पाथर-हवाक बहुतायतसँ ठण्ढे बनल रहल।

समय-समयपर हवाक रूखि मौसमकेँ अनुकूल बनौने रहल जइसँ समयमे ने बेसी तापमाने बढ़ल आ ने उतैर कऽ निच्चे खसल। दुनूमे सँ कोनो भेने समैयक संग मौसमो बिगैड़ जाइते अछि। जेकरा बुझै-परखैमे हाथीए जकाँ, हाथी जकाँक माने भेल जेकर चारू टाँग एते सबल अछि तैयो चूकि जाइए, मनुखो चुकबे करैए।

अपना ऐठाम किसानक पथ-पंथक पथिक डाक-घाघ, ऐतिहासिक पुरुख भेल छैथ, जिनकर कहब छैन- 'पनरह कातिक, तीस अखाढ़ जे सुतल से गेल बजार।' मुदा केहेन कातिक आ केहेन अखाढ़?

मासक रूपोक गुण तँ तीनबटिया जकाँ छइहे। जइ साल अधिक बरखा भेल, तइ सालक मौसमक मिजाज दोसर रंग रहैए, जइ साल रौदी भेल, माने समयोपर आ उचितो बरखा नइ भेल, तइ सालक मन-मिजाज दोसर रंग भइये जाइए। तँए कि ओहन समय नइ होइए जे सोल्होअना उचिते-उचित हुअए। सेहो तँ होइते

अछि। तेहने समय ऐ बेरक अछि।

मौसम नीक भेने मौसमी फसलो नीक हेबे करत...।

विक्रम बाबा अपन बरसाती मौसमक फलबगानमे फलक गाछकेँ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि मेहपनिया नजैरसँ देखि रहल छला। मेहपन कहियौ कि मेहपनिया, माने भेल ओकर मेही-सँ-मेही रूपमे मेहिया कऽ ओकर बारीकपनकेँ बुझब।

जहिना मनुक्खक जिनगीमे अतीत-वर्त्तमान आ भविस चक्कर लगबैत चलैए आ ओही बीच बच्चाकेँ देखि अपन बालपनो आ वृद्धकेँ देखि अपन वृद्धपनो लोक बुझै-गमैए तहिना विक्रम बाबा, गरमी मासक मौसमी फलक वर्त्तमानकेँ देखि रहल छला आ जाड़क मौसमक फलक भविस दिस सेहो तकै छला।

'अनजान सुनजान महा कल्याण' जहिना कहल जाइए तहिना मौसमो आ मौसमक फलो-फूल आ अनो-पानिक लीला अछिए। जहिना कोनो अने वा फले-फूल अपनाकेँ समेट अपन उदय-प्रलय मौसमे अनुकूल निमाहैत चलैए तहिना भेल, तँए ई कहब जे ओ बरहमसिया, माने सभ मौसममे, नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो होइते अछि।

तही बीच विक्रम बाबाक पाँचो-सातो बुदरूकिया पोता-पोती लगमे पहुँच 'बाबा-बाबा' करए लगलैन। नमहर परिवार रहने पाँचो-सातो बुदरूकिया अपने पोता-पोती छेलैन। तहूमे पोता-पोती आ दादा–माने बाबा, आ दादी माने बाबीक बीच जेहेन मीठगर सम्बन्ध हेबा चाही से छैन्हे। जेकर फलाफल सोझहेमे छेलैन जे सभ बुदरूकिया अपना संग खेलए चाहै छेलैन...।

पाँचो-सातो बुदरूकियापर विक्रम बाबा तड़तड़ा कऽ तड़तड़ाइत बजला- "भागै जेमे कि नइ..!"

जहिना देहपर सोहरैत मच्छरकेँ लोक बिऐन हौंकि कनी हटबैए तहिना धिया-पुता कनी हटि अपने खेलैक गर बनौलक। विक्रम बाबा अपना गरे अपन गर लगबए लगला आ बाल-बोध अपना गरे। मुदा तेते जोरसँ धिया-पुताकेँ कहने छेलखिन जे दू साए गजक दूरीपर आँगनक सभ स्त्रीगण सुनलक।

जहिना चिन्हल बोल तहिना जेकरा कहने छेलखिन सेहो चिन्हले-चिन्हल छेलैन।

आँगनमे स्त्रीगण सबहक बीच टीका-टिप्पणी शुरू भेल। एक तँ ओहुना बैसारी लोकक ठोरपर बरी बेसी बनिते अछि, तहूमे बाल-बोधक मुद्दो पकड़ाएले अछि। एक गोरे बजली- "बुड़हाक मति घुमि गेलैन अछि।"

दोसर टिपलैन- "से कि कोनो चोराएल बात अछि।"

ओना, ई बुझैत हएब जे फुस-फुसा कऽ ओ सभ अँगनेमे बजै छेली से बात नहि, विक्रम बाबाकेँ सुना-सुना बजै छेली। विक्रमो बाबा सभ सुनै छला मुदा मनमे मिसियो भरि मलाल नइ जगलैन जे सभ कियो माने स्त्रीगण सभ (पुतोहु) सीमा तोड़ि बाजि रहल छैथ। ओना, ई बात दिन-दिनक बेवहार[9]सँ विक्रम बाबा सेहो जानियेँ रहल छैथ। तँए, विक्रम बाबा-ले धैनसन। अपन जिनगी जीबैक निसचित आधार विक्रम बाबाकेँ छैन्हे। विक्रम बाबा बिसवासपूर्ण ढंगसँ जानियोँ रहल छैथ आ मानितो तँ छैथिए जे लाखो काज जिनगीक बीच अछिए, जे जिनगीधारककेँ निमाहै पड़ैए। मुदा एक संग जँ एकसँ अधिक काज एकठाम गोठिया जाए, तखन की हएत.! कियो तँ एकबेरमे एकेटा काज करत।

आन-आन जे करैथ मुदा विक्रम बाबाक स्पष्ट विचार छैन जे

---

[9] बजैक लत

जहिना काजेपर जिनगी जरूर ठाढ़ अछि तहिना काजपर काज सेहो ठाढ़ अछिए मुदा काज-काजक अपन-अपन मोलो (भैलू, Value) तँ अछिए। कोन काजक की मोल अछि से विक्रम बाबा स्पष्ट बुझै छैथ।

जेहेन महत्-क काज रहत ओकर प्रक्रियाक (करैक प्रक्रिया) महत् सेहो तेहेन रहत। कृषकक जीवन धारण केने छी, हमरा-ले कृषिसँ सम्बन्धित–क्रियासँ विचार धरिक–काज सभसँ महत्-पूर्ण अछि।

ओना, दुनियाँकेँ जानब अधला विचार नहि, मुदा ईहो तँ प्रश्न अछिए जे एते विशाल दुनियाँ आ ओइ दुनियाँक विशालतम जीवनक बीच जखन छी तखन जेते सम्भव हएत तेतबेक ने अपन सीमा बनाएब। जँ से नहि करब तँ जहिना रामकेँ लंका जाइकाल पुल बनबैक खगता भेलैन जेकरा बनबैले नल-नील सन कारीगर भेटलैन, जिनका–माने नल-नीलकेँ–पानिमे पाथर अलगबैक लूरि तँ छल मुदा टुकड़ा-टुकड़ी पाथर एकबट्ट केना बनत से लूरिये ने रहइ, तहिना ने अपनो हएत।

विक्रम बाबाक मन-चित्त एक्कोरत्ती पुतोहुक डाकवाक् सँ नहि सिहरलैन।

आधा जेठ बित गेल आ बरसाती फलक सृष्टिक समय आबि गेल। विक्रम बाबाक मनमे एलैन जे जहिना हमर दाता ई छी माने फल, तहिना ने हमहूँ एकर कर्त्ता-धर्त्ता, भोक्ता-भुक्ता सभ छिऐ, तँए अखनेसँ ने तनदेही दइक खगता अछि। नइ ते डाकबाबाक विचार ओहिना ने भऽ जाएत जेना 'शिकारी औत, जाल बिछौत, लोभसँ फँसब नहि, मुदा फँसि गेल सभटा।

आँगनसँ एकटा पुतोहु आँखि लाल-पीयर केने बच्चा लग पहुँच

गेली।

ओना, जहिना पुतोहुक बात विक्रम बाबा-ले धैनसन छेलैन तहिना बाल-बोध-ले बाबोक बात छेलैन्हे। ओकर कोन मतलब छै जे बाबा जोरसँ बजला तँ उनटन भऽ गेलइ। जहिना सभ काल बजै छैथ तहिना बजला। तहूमे असगरमे माने एकटा बच्चापर जे जोरसँ बजितैथ तँ कनी कटाहो होइत, मुदा जैठाम जेरगर छी–माने पाँच-सात बच्चा–तैठाम जँ जोरसँ नहि बजता तखन केकरा की कहलखिन से कियो थोड़े बुझि पौत।

बच्चा सभकेँ संग मिलि खेलाइत देखि पुतोहु ओहन शिकारी जकाँ वौआ गेली जेकरा ठेकाने छै जे कोन तरहक शिकार खेलैले जाइ छी।

पुतोहुकेँ वौआइक कारण भेलैन जे चारू दियादनीक बच्चा अछि, केकरा कहलखिन से कि कोनो अपना आँखिसँ देखलिऐ। मुदा कर्मनिस्ट आ कर्महीनक बीच सांस्कारिक मतभेद तँ अछिए जे विक्रमोबाबाकेँ आ पुतोहुओकेँ बुझैक अपन-अपन ढंग छेलैन।

विक्रम बाबा मने-मन अपन फलक गाछकेँ तजबीजो कऽ रहल छला आ कनडेरिये आँखिये पुतोहुक लीला माने ताल-भजार सेहो देखि रहल छला, मुदा दुनूमे सँ कियो बाजि नहि रहल छला।

❑ *शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019*

पनरह किलोक कदीमा

दोकानक पहिल सीढ़ीसँ ऊपर दोसर सीढ़ीपर बामा पएर दइते छेलौं कि एक गोरा दोकानदारकेँ चोहटैत बाजल-

“झूठा-फूसा, ठक-बेइमान कहींकेँ..!”

एक पएर निचले सीढ़ीपर छल, दोसर सीढ़ीपर दोसर पएर नीक जकाँ रोपनौं ने रही कि दोकानक मुँहपर होइत बात-चीतक एक भाग ‘माने झूठा-फूसा, ठक-बेइमान कहींकेँ’ सुनलौं।

दोकानक मुँहपरक बात सुनि अपन मन कहि उठल, ‘अनेरे नाँहकमे दोखी भेलौं। दोकानदार सहित आनो-आन गहिंकी सभकेँ शंका हेबे करत जे जरूर एकरे सह पाबि एहेन कटाह बात बाजल अछि।’

ओना, अपने ने बजनिहारकेँ चिन्हैत रही आ ने दोकानदारेकेँ ओइ रूपेँ चिन्हैत रही जे कोनो तरहक घनिष्टता–दोस्तियारेसँ लऽ कऽ गौंआँ, घरूआ, दियाद-वाद धरिक सम्बन्ध–हुअए। मात्र एतबे चिन्हारए अछि जे ओ खाद-बीआ, कीटनाशक इत्यादिक दोकान करैए आ अपने किसान छी, तँए जरूरतक वस्तु भेटैए, बस एतबे। मुदा अनचोकेमे अपने फँसि गेलौं। तहूमे ओ बजनिहार सेहो दोहरा कऽ फेर बाजल-

“भने अहूँ आबि गेलौं। ई बनिया मारि खाइबला अछि कि नहि?”

ले बङ्गौर! आब तँ आरो हिस्सेदार बनल जा रहल छी। एक तँ

अपने अनचोकेमे छी, तैपर ओहन गबाही सेहो बनल जा रहल छी जेना अपना सभ कुछ बुझल हुअए! जखन कि पहिने की सभ भेल से किछु ने जनै छी... ।

गमैया रामायणी जकाँ रामायणक केतौक एक पाँति उठा उदाहरण लैत आ सम्पूर्ण जिनगीक कथा ओहीपर आधारित करैत अपन कुरथी बलुअबैए!

'अपन कुरथी बलुआएब' मिथिलांचलक एक कहबी छी, जेकर माने होइए- अपन लाभ उठाएब। ..अपने अनचोकेमे ई रही जे मधुबनीसँ घुमल गाम अबैत रस्ताक बीचक दोकानपर गेल रही। गाए पोसने छी, तेकरे बरसाती घासक ओरियान-ले खेत पटौने रही, जे मौसमक परसादे बेहाल भेल जा रहल छल। तेही घासक बीआ कीनैले एक-दू-तीन-चारिम दोकानपर पहुँचल रही। मनमे कछमछी लगले छल जे जँ काल्हि बीआ बाउग नइ करब ते पटौनीक खर्च बुड़ि जाएत। डेढ़ साए रुपैये घन्टा दमकलसँ खेत पटौने छी। तीन कट्ठा खेत दू घन्टामे पटल।

पानिक सतहकेँ निच्चाँ उतरने बोरिंगक पानियोँ कमियेँ गेल, तैसंग जमीनक अप्पन हाल निच्चाँ उतरैत-उतरैत जरिये गेल अछि, तँए दू घन्टामे तीन कट्ठा खेत पटब सोभाविक अछिए। ओना, जैठाम बिजली बोरिंग वा नहरक बेवस्था अछि तैठाम तँ पानि कनी सस्तो अछि मुदा जैठाम तेलबला दमकल चलैए तैठाम तेलक दाम बढ़ने दमकलक चार्ज तँ बढ़ि जाइए। मुदा जँ कनी-मनी डीजलक दाम घटबो करैए तैयो बोरिंग-दमकलक रेट ओहिना रहैए। ओकरो–माने दमकल रखनिहारोकेँ सेहो–हनुमानेजी जकाँ नमगर-चौड़गर पुछड़ी लटकले अछि। माने दमकलक तेहेन पार्ट-पुरजा सभ आबि गेल अछि जे ओ–बेचनिहार–बेचनिहार नहि, किसानी जिनगीक एक हिस्सेदार बनियेँ गेल अछि।

तैबीच अपने सीढ़ीपर सँ उतैर दोकानक निच्चाँ कतबाहिमे राखल ब्रेंचपर जा बैसलौं। पहिनेसँ जे तीनू-चारू गहिंकी बैसल छला ओहो सभ एक-दोसरकेँ खाली मुँह तकै छला मुदा बजैथ कियो किछु ने। मनमे भेल जे जँ आब अपने मुँह नहि खोलब तँ अनेरे सबहक नजैरमे दोखी हएब। बजलौं-

"की बात छी से जड़िसँ बाजब तखने ने बुझब?"

हमर बात सुनिते दोकानदारो आ ओ (लगारीलाल) गहिंकी सेहो ठमकल। लगारीलाल बाजल-

"भाय साहैब! दोकानदारेकेँ पुछियौ जे की कहि केहेन कदीमाक बीआ देने छल, आ उपज केहेन भेल से हम कहब।"

लगारीलालक बात सुनि एते तँ बुझैमे आबिये गेल जे कदीमा खेतीक बात छी। बजलौं-

"ओना, नीक हएत जे अपनेमे अहाँ दुनूगोरे फरिछा लिअ। जँ से नहि करब तँ बेरा-बेरी दुनू गोरे अपन-अपन बात राखू।"

ओना, अपनो मन दोकानदारपर छनगले छल किए तँ जइ घासक बीआ कीनैले तीन दिनसँ दोकाने-दोकान वौआ रहल छी, सभ दोकानमे बीओ अछि, जे खरीदबाल सभसँ भाँज लगले अछि, मुदा मुहाँ-मुहीं सभ दोकानदार यएह कहैए जे 'काल्हिये बीआ सठि गेल।'

ओना, ई बात पछाइत बुझलौं जे दोकानदार सभ महग बेचै दुआरे एना करैए। कहबी छै जे 'चोर बाजे जोरसँ' मुदा साधु मुँह चुप राखए सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। ओहने साधुकेँ ने लोक मुँहचोर कहै छैन...।

जहिना लगारीलाल अपन बात रखैले तैयार भेल तहिना दोकानदारो। ओना, ई बात मनमे उठैत रहए जे कोनो विवाद वा

झंझटक निपटान जँ सबहक, माने दुनू पक्षक जिनगीकेँ नजैरमे रखि हुअए तँ ओ बेसी नीक हएत। मुदा होइ तँ से नहि अछि, जे पक्ष अपनाकेँ सबल बुझलक ओ दोसरकेँ अबल बुझि दबबे करैए।

कुरताक ऊपरका जेबीसँ कदीमा बीआक खाली पैकेट आगूमे रखैत लगारीलाल बाजल-

“भाय साहैब, दाम-छाप पछाइत पढ़ब, पहिने कदीमाक जे फोटो बनल अछि, तेकरा मेहिया कऽ देखियौ।”

अपना मनमे हुअए जे तेहेन-तेहेन फोटो खिंचैबला ओजार सभ आबि गेल अछि जे बौका[10]केँ मंचपर चढ़ा भाषण करा दइए आ पैरटुट्टाकेँ ताड़क गाछपर चढ़ा दइए, तैठाम फोटोसँ कोनो चीज देखि कऽ केना आँकि लेब?

मुदा तैयो मेहिया-मेहिया कऽ फोटो देखए लगलौं। अपन आँखि तँ पैंतीस किलोक कदीमा सेहो देखने अछि, आ धरमपुरिया लदीमा किलो-किलो भरिक सेहो देखनहि अछि। तँए कोनो थाह पेबिये ने रहल छेलौं।

तैबीच एकटा आरो भेल। आरो ई भेल जे पहिनेसँ जे चारि गोरे दोकानपर बैसल छला, ओइमे सँ दू गोरे लगारीलालक संग भऽ गेला। लगारीलाल बाजल-

“भाय साहैब, फोटो देखि अपन मन कहलक जे पनरह किलोक कदीमा जरूर हएत। ओना, अपने आइ धरि कदीमा-खेती नइ करै छेलौं, किए तँ जहिना बड़का पोरो[11] डाइन होइए तहिना कदीमो कोढ़िया छीहे। सजमैनिक खैती करै छेलौं, सामाजिको मान्यता सजमैनकेँ छल, माने भोज-काजमे चलैत रहइ। मुदा

---

[10] मूक

[11] नमहर पातबला पोरो (साग)

जखन समाज एकरा अमान्य कऽ देलक तखन कदीमेक ने उठाइन हएत। एते दिन जहल अपराधी-ले छल आब साधु-सन्तक ठकुरवारी बनियेँ गेल अछि किने।"

लगारीलालक बात सुनि बजलौं-

"दुनियाँक पाछू अनेरे नइ वौआइ छी। अपन कि बात अछि से बाजू।"

लगारीलाल बाजल- "भाय साहैब, पनरह-बीस किलोक फड़क बात दोकानदारो कहलक।"

अपन नाम सुनिते दोकानदारो बाजल- "हमर कि कोनो अपन कारोबार अछि, बाहरसँ समान अबैए आ ओकरा आगू बढ़बैत बेचै छी, तइमे जे कमीशन बँचैए से कमाइ भेल। जेना-जेना कम्पनीक एजेन्ट कहैए तेना-तेना हमहूँ बजै छी।"

जहिना लगारीलालक आश टुटल देखि रहल छेलौं तहिना दोकानदारोक अपन आश–बदनामी भेने जहिना व्यक्तित्वो टुटैए तहिना ने कारोबार सेहो टुटिते अछि–सएह देखि रहल छेलौं। बजलौं- "भाय दोकान छिऐ। खरीद-बिक्रीक जगह छी। हमहूँ काजे आएल छी। अखन हमरो अगुताइ अछि।"

लगारीलाल बाजल-

"हँ, से तँ ठीके बजलह हेन। आरो विचार दोसर दिन करब।"

हमहूँ बजलौं-

"अखन जाइ छी, फेर आबए।"

❑ *शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019*

फेर नढ़रो बेल तर जेती

बी.ए.क परीक्षा देला पछाइत गामेमे रही। अखाढ़ चढ़ै-चढ़ैपर रहै, जेठक अन्तिम समय छल। धुरझाड़ आम पाकब तँ शुरू नइ भेल छल मुदा तीस-चालीस प्रतिशत–माने अगता किस्मक–आम पाकि रहल छल तथा मध्यम आ पचतिया[12] किस्मक आम कोनो बोनेबो करै छल आ कोनो-कोनोमे अखन कोशो होइ छल।

अपनो गाछी-कलम अछिए, गाछीक मचानपर बैस अपने विषयमे सोचि रहल छेलौं जे ऐगला मास रिजल्ट निकलत। पछाइत नोकरी-चाकरीक जिनगी शुरू हएत।

कौलेजसँ लऽ कऽ हाइ स्कूलक संग मिडिल स्कूल तकक जीवनमे मन दौड़ गेल। मिडिल स्कूल तक तँ सहरगंजे[13] रहलौं मुदा हाइ स्कूल अबिते रेलबे जंकशन जकाँ तीनटा रस्ता फुटि गेल। किछु विद्यार्थी साइंस– बायलोजी–रखलैन तँ कियो कॉमर्स रखलैन आ कियो आर्ट।

अपनो आर्टे रखलौं। तैबीच एते बुझि गेल छेलौं जे आर्ट पढ़निहार खुल्ला बेपारी होइए आ साइंस पढ़निहार बन्हाएल डॉक्टर-इंजीनियर।

ओना, अपना पढ़ै-लिखै दिस धियानो कम रहिते छल मुदा काज-जोकर नइ रहै छल सेहो बात नहियेँ छल, से तँ रहिते छल, जँ

[12] लेट भेराइटी

[13] जेनरल विषय पढ़ैबला

से नइ छल तँ केना बी.ए. तक कहियो फेल नइ केलौं। ई दिगर भेल जे प्रथम श्रेणी कहियो ने भेल, गोटे साल सेकेण्ड डिवीजन तँ गोटे साल थर्ड डिवीजन होइत रहल। जइ साल थर्ड डिवीजन होइ छल तइ साल प्रश्न-पत्र बनौनिहारकेँ दोखी बनबैत मनकेँ बुझा लइ छेलौं जे अनाड़ी-धुनाड़ी प्रश्न-पत्र बनौनिहार छला आ जइ साल सेकेण्ड डिवीजन होइ छल तइ साल प्रश्न-पत्र बनौनिहारकेँ इमानदार जीवन जिनीहार मानि मनकेँ मना लइ छेलौं। ओना, एकटा लाभ जीवनक भेटिये चुकल अछि। ओ ई जे बिआह भऽ गेल अछि।

ओना, अहाँ कहि सकै छी जे आब जँ बिआह करितौं तँ चरिपहिया गाड़ीक संग तेहेन मोबाइल भेटैत जे सौंसे दुनियाँ जेबीए-मे रहैत। तैपर सँ नगदो-नारायण भेटबे करैत।

मुदा ई तँ भेल अहाँक विचार, मुदा अपन मन तँ कहिते अछि जे पढ़ल-लिखल हुअ कि बिनु पढ़ल-लिखल, जे नोकरी करैए तेकर मांग बिआहमे बढ़ि गेल अछि आ जे नोकरी नइ करैए ओकर बिआहो होइमे रौदी लागिये रहल अछि।

खाएर जेतए जे अछि अपने तँ ओहन भाग्यशाली छीहे जे पत्नीक मातो-पिता मरि गेलखिन आ भाए छैन्हे नहि, तँए एते बिसवास अछिए जे पत्नी सभ दिन संगे रहती।

तही बीच मचानक बगलेक गुलाबखास गाछसँ एकटा आम खसल। एक तँ लगमे खसल छल, दोसर ऊपरसँ जे खसल से पत्तामे झड़झड़ाइत आएल छल तँए विचार भंग भइये गेल। मचानपर सँ उतैर आम उठेलौं। पिताजीक रोपल गाछ, केते सुन्दर सिनुराएल, ललियाएल आम अछि। बढ़ैत पीढ़ीक[14] ओइ सिनुरपन आ ललिपनकेँ आरो जगजगार करैक ने जिम्मा अछि। ओइ

[14] वंशगत सीढ़ीक

जिम्माकेँ मद्देनजैर ने अपन जिम्मा बुझब..?

मनमे उठल जे अखन धरि पिताजीक आदेशानुकूल ने चलैत आबि रहल छी। तँए नीक हएत जे पहिने पिताजी सँ अपन भविसक विचार विचारि लेब बढ़ियाँ रहत।

मुदा लगले मन छान-पगहा तोड़ि उफैन उठल जे जखन बी.ए.क परीक्षा दऽ चुकल छी, अठारह बर्खसँ ऊपर उमेर सेहो भऽ चुकल अछि, सरकारोक नियमानुकूल वयस्क सेहो भइये गेल छी, तखन अपनो विचारक महत् तँ अछिए।

तत्-मत् करैत अन्तिम विचार भेल जे पिताजीसँ पुछि लेब जरूरी अछि।

घरपर आबि पिताजीकेँ पुछलयैन-

"बाबू, आगू पढ़ैक तँ आब विचार नहियेँ भऽ रहल अछि, किएक तँ एम.ए. करबो करब तँ प्रोफेसर थोड़े बनब। कौलेजक नोकरी तँ हुनका सबहक हाथमे छैन जे कौलेज बनौने छैथ वा पैरवी-पैगामबला छैथ। अपना तँ से नहि अछि, तखन अनेरे किए दू साल समैयो आ खरचो बेरबाद करब। तँए अपने जे कहब आगू सएह करब।"

सोझमतिया पिताजी छथिए, अपन सोल्होअना भार हटबैत बजला-

"जनम दइ छै माए-बाप करम तँ अपने काज दइ छइ।"

ओना, अपना जनैत पिताजी जवाब दऽ देलैन मुदा अपन मन ऐ दुआरे नइ मानलक जे साफ-साफ तँ पिताजी किछु ने कहलैन। काल्हि दिन जँ किछु हएत तँ बजबे करता जे 'अपना मने केलक, अपन बुझह!' से नहि तँ खरिआरि कऽ पुछि लेब जरूरी अछि। बजलौं- "अपने जे कहलौं से तँ सभ जनैए मुदा हमरा-अहाँक बीच

तँ एकटा खास सम्बन्ध सेहो अछिए, तइ नीविते पुछलौं।"

पिताजी बजला-

"हम अपने कहियो पिताजीसँ ई बात नहि पुछलयैन जे हम की करब। स्कूल नइ देखलिऐ, जेना-जेना बढ़ैत गेलौं, माने उमर होइत गेल, तेना-तेना काजमे संग-साथ दैत गिरहस्तीक सभ लूरि सीखलौं। पछाइत, जखन ओ–पिता–बुढ़ भेला तखन अपने कहलैन जे 'आब अपन परिवार सम्हारह!' पाँच बीघा जमीन हुनकर छेलैन। जेकरा हम गुजर[15] करैले एक्को बीत नइ बेचलौं।"

बिच्चेमे बजलौं-

"किछु तँ हमरो विचार देब किने?"

जेकर अभाव लोकमे छैन माने विचार करैक क्षमता रहै वा नइ रहै मुदा किछु-ने-किछु विचार दइये दइ छैथ, से पिताजी एते जरूर टेकलैन जे इमानदारीपूर्वक बजला-

"बौआ, दीनाभाय विचारक लोक छैथ। ओ कियो आन नहियेँ छैथ जे जँ पुछबुहुन तँ परिवारक तौहीन हएत। हमरो किछु पुछैक रहैए तँ हुनकेसँ पुछि लइ छिऐन। हुनकेसँ पुछि लहुन।"

मन ठमकल। एते तँ जरूर ने भऽ गेल जे व्यासजीकेँ जहिना महाभारत लिखैकाल ब्रह्मा बेसी वौएलखिन नहि बल्कि सोझे गणेशजी लग पठा देलखिन तहिना मन मानि गेल जे दीना काकासँ राय-विचार कऽ लेब।

दोसर दिन, साँझूपहरकेँ दीना काका ऐठाम पहुँचलौं।

पान-सात गोरेक बीच दीना काका अपने जीवनक घटना सुनबैत रहथिन। इशारेसँ प्रणाम केलिऐन। मुदा ओ अपन बाजब

---

[15] परिवार चलबैमे

रोकि असीरवाद दैत बजला- "भने बौआ शंकर तोंहू आबिये गेलह। तोंहू सुनह।"

फेरसँ–ऐगला-विचारकेँ रोकि, माने जे बाजि चुकल छला– जड़ियेसँ बाजब शुरू केलैन-

"अपना इलाकामे पाँच गोरे हम सभ ट्रेक्टर एकसंग लेलौं। ओ सभ हमरासँ बेसी खेत-पथारबला सभ छैथ। अपना दसे बीघा खेत छल जइमे चारि भैयारी छी। हमहीं घरक गार्जनो आ भैयारीमे जेठ सेहो छीहे। कौलेज छोड़ि कऽ आएले रही। आगू बढ़ि किछु करैक जिज्ञासा मनमे रहबे करए। माने ई जे परिवार केना आगू बढ़त। मुदा से सोचा गेल एकभग्गू, आर्थिक दृष्टिसँ केना आगू बढ़त से तँ बुझि पेलिऐ मुदा बौद्धिक बढ़त केना हएत से बुझबे ने केलौं। समांग सभ देखिते छहक जे केहेन बतौर सभ अछि।"

अपनो मुड़ी डोला-डोला विचार ग्रहण करिते रही। समांगक गप उठल तखन मुँह मुस्किया गेल। किए तँ भैयारीमे असगरे छी, मुदा ई बुझिमे एबे ने कएल जे माता-पिताक सोल्होअना भारो अपनेपर पड़त। माता-पिताक कुभेला भेला पछातियो समंगरमे एक-दोसरकेँ दोख लगबैत अपन-अपन पल्ला झाड़ि लइए, मुदा से असगरमे थोड़े हएत।

हमर मुस्की देखि दीना काका निर्णायक दौड़मे पहुँच बजला-

"शंकर बौआ, अढ़ाइ बीघा जमीन ट्रेक्टरक लोन चुकबैमे बिका गेल। जेकर फलाफल ई भेल जे समांग सभ अखनो बेइमान कहिते अछि।"

मन ठमकल, बजलौं-

"काका, हमरा की विचार दइ छी?"

दीना काका बजला- "बौआ, तूँ अखन होनहार छह, अपनो

पैतृक सम्पैत छह, जँ पूजीक जरूरत छह ते पूजी ट्रान्सफर कऽ लएह। एक दिस कारखानाक दौड़ अछि, दोसर दिस बैंकक पकड़ सेहो अछिए। कबीर बाबा कहने छैथ, दो पाटन के बीच में बाँकी बचे ने कोई।”

दीना कक्काक विचारक प्रवाहमे अपनो प्रवाहित भऽ गेलौं जइसँ मुहसँ खसि पड़ल-

“हँ! से तँ अछिए।”

अपन विचारमे सह पबैत दीना काका बजला-

“सुभिमानी जिनगी जीबैले सुतंत्र विचारोक आ काजोक बाट अनिवार्य अछिए तँए सबहक (अनकर) आशा छोड़ि, अपन आशा जखन लोक करैत आगू डेग उठबैए तखन ओकरा अपन काजो आ विचारोक प्रति दृढ़ता अबै छइ। वएह दृढ़ता बढ़ैत-बढ़ैत सुदृढ़ बनै छै जे मनुक्खक मूल सम्पैत कहक आकि मूल पूजी, छी।”

अपना जनैत दीना काका धाराप्रवाह बाजि रहल छला मुदा जहिना धारक प्रवाहकेँ, धारमे बनल मोइन वा कोनो नमहर पाथरक टुकड़ा वा कोनो लकड़ीक सील रहने, रोको-राक करैए आ घुमावदार सेहो बनैबते अछि तहिना अपनो मनमे भेल। कोनो स्पष्ट–सोझ–रस्ता नहि देखि मन भनभनाए लगल। भनभनाए ई लगल जे केतए एलौं तँ केतौ ने। किए तँ जइ हिसाबे बुझए चाहै छेलौं से नीक जकाँ बुझिये ने पेलौं। बजलौं-

“काका, अपनेसँ अपना सम्बन्धमे किछु राय-विचार करैक सुझाव लइले आएल छी।”

‘राय-विचार करैक सुझाव-ले आएल छी’ सुनिते दीना काका मुँह बन्न करैत मने-मन विचार करि कऽ बजला-

“बौआ शंकर, बजैक कोनो ठेकान अछि। जहिना अरबो-

खरबो लोक दुनियाँमे छैथ तहिना ने अरबो-खरबो सम्बन्ध ‘पिता’ रूपमे सेहो आ ‘बेटा’ रूपमे सेहो अछिए। तहीमे ने पिता-पुत्रक पहचान खास-खास लोकक बीच सेहो अछिए।”

दीना कक्काक विचार नीक जकाँ बुझैमे आबि गेल। जइसँ मन मानि गेल जे जँ अहिना अपन सभ बातकेँ[16] काका सोझरा कऽ बुझा दैथ तँ सभ बुझि जाएब। जखने वस्तु वा समस्या सामनेमे औत तखने ने विचारक दुनियाँमे शब्द जागत, माने शब्द बनत। जखने शब्द जागत तखने ने शब्दक माध्यमसँ एक-दोसरमे वैचारिक संग काजोक जन्म हएत...।

मन जेना पोखरिक पानि जकाँ थीर भऽ गेल। बजलौं-

“काका, जे-जे गिरह अपना जिनगीमे बुझि पड़ैए से बजै छी, अपने ओकरा खोलि दिअ।”

दीनो काका जेना सोल्होअना विचार मानि लेलैन तहिना कहलैन- “बाजह, बाजह।”

बजलौं- “काका, खेती-पथारीक दशा देखिते छी। दिना-दिन बाबुओ-माइयोकेँ हूबा घटबे करतैन, तखन तँ अपना ऊपर भार पड़त।”

बिच्चेमे दीना काका बजला- “तोरे सन विचार बुझनिहार विद्यार्थीक स्कूल-कौलेजक अध्ययन साफल भेल। नीक विचार मनमे जगलह हेन।”

बजलौं- “खेतीसँ जुड़ल कारोबार शुरू करैक विचार अछि। बैंक सभ सेहो मदत कइये रहल अछि।”

हाइ रे बा! बैंकक नाओं सुनिते दीना काका भड़कैत बजला-

[16] जिनगीक समस्याकेँ

"फेर नढ़रो बेल तर जेती।"

दीना कक्काक विचार सुनि मने औना गेल जे महाभारत जकाँ सौमा दृष्टिकुट श्लोक केतए-सँ आबि गेल! एतबे बजलौं- "काका..!"

दीना काका बजला- "बौआ, अपन मुँह पाकल अछि तँए तोरा नइ कहबह जे ओहन बेल तर जा जे बेलक खातिर बेलक काँट गरौने आबह, आ तेकरा इलाज करबैले लहेरियासराय अस्पताल जाए पड़ह।"

कनी-कनी दीना कक्काक विचार बुझैमे आबए लगल। जइसँ मन चनियाएल। चनियाइते बजलौं- "तखन?"

दीना काकाकेँ जेना गामक सभ सम्पैतिक हिसाब बुझले होनि तहिना बजला- "बौआ, अपना पाँच बीघा खेत छह, जे आइक परिवेशमे करोड़ोक सम्पैत भेलह। तखन जँ आगू बढ़ि कारोबार करबह तँ खेतीक काजमे समैयक कटौती सेहो हेबे करतह, तँए जँ कनी-मनी पूजी एक-दिससँ दोसर दिस घुसका देबहक तँ अनेरे पूजी हाथ लगि जेतह।"

मन मानि गेल। बजलौं- "काका, यएह नइ बुझि पेबै छेलौं।"

दीना काका बजला-

"कहबी छै जे संगेमे वैद मियाँ मरता है। बौआ! असल पूजी मनुक्ख अपने छी। तँए जेहेन अपनाकेँ बनेबह, ओहन पूजीपति बनबह।"

❑ *शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019*

काजक धुनि

कालि्ह रजिष्ट्री ऑफिस[17] जाएब। जिनगीमे पहिल-पहिल दिन जाएब तँए ऑफिसोक आ खेतो-पथारक लिखा-पढ़ीक बात नीक जकाँ अपने नइ बुझै छी। मुदा रतनलाल भाय सभ तरहेँ जानकार लोक छथिए। हुनके भार देने छेलिऐन जे जमीन लेब, ओइ जमीनक भाँज कनी नीक जकाँ लगा दिअ। किए तँ गाममे देखिते छी जे एक-एक जमीनकेँ तीन-तीन बेर, तीन गुणा दाम[18] दऽ दऽ लोक रजिष्ट्री करबैए आ तैयो केते रंगक खोंच-खाँच रहिये जाइए। जइके चलैत बेर-बेर झंझट सेहो होइते अछि।

ओना, ई बात बुझल अछि जे रतनलाल भाय अपना धुनिक पक्का लोक छैथ। मुदा से छैथ समैयक हिसाबसँ। भरि दिनमे करखनो हुनका काजसँ पलखैत नइ रहै छैन तँए गप-सप्प करैक समय साँझुका पहर रखने छैथ। बुझल अछिए, तँए साँझूपहर हुनकासँ भेँट करए विदा भेलौं।

दरबज्जापर बैसल रतनलाल भाय सातो-आठो गोरेक बीच चाह पीब रहल छला। पहुँचते रतनलाल भाय बजला-

“रमेश, चाह पीने छह आकि पीबह?”

ऐठाम एकटा बात फरिछा लेब अछि जे जँ किनको दरबज्जापर एला पछाइत एहेन बात बाजब तँ हुनका आग्रहकेँ

---

[17] जैठाम खेतक लिखा-पढ़ी होइए

[18] मूल्य

अनाग्रह अर्थ लगबे करतैन जइसँ हुनकर क्रोधाग्नि जगबे करतैन जे अपमानित भेलौं हेन। मुदा रतनलाल भायमे से नहि छैन, हिनकर अप्पन जीवन शैली छैन। जइसँ अपन विचारो आ अपन बेवहारोक ढंग अपने जकाँ छैन। काजक महत् देखि रतनलाल भाय अपन समय गमबै छैथ। चाह कोन बड़ भारी वस्तु छी जे ओही पाछू लोक अपन महत्-पूर्ण काजक मुहूर्तकेँ दुइर करत। चाहक उपयोग लोक नव उर्जा सृजन करैक खियालसँ करै छैथ जेकर जरूरत समयानुकूल होइए। ऐठाम तँ सबहक हाथमे चाहक गिलासो बँटा गेल अछि आ जेते चाह बनल छल सेहो सठि गेल अछि। तँए फेरसँ बनबैक जोगार करए पड़तैन। यएह सोचि रतनलाल भाय बाजल छला।

ओना, अपना ई बुझले अछि जे रतनलाल भाइक एहेन बेवहार छैन तँए सोभावो ओहने बनि गेल छैन।

चाह पीब पान खा घरपरसँ चलले रही, तँए चाहक तँ कोनो पकिया सबूत–माने चाह पीने छी कि नहि–नहियेँ छल, एतबे छल जे चाहक पछाइत कियो 'खैनी' खाइ छैथ तँ कियो 'सिगरेट' पीबै छैथ तँ कियो 'बीड़ी' पीबै छैथ आ कियो पानो खाइते छैथ, मुदा एहनो लोक तँ छथिए जे किछु ने खाइ-पीबै छैथ। ऐठाम खाइ-पीबैक माने अमलसँ अछि, अपना मुँहमे पान रहबे करए तँए चाह पीबैक एकटा सबूत छेलए-हे। मुँहक अधखिज्जू पान देखबैत बजलौं- "रतन भाय, देखै छिऐ चाह पीब पान जे खेलौं से ओहिना अछि। लगले चाह पीने छी तँए चाह-ताहक जरूरत नहि अछि। अहाँ सभ पीबू।"

चाह पीला पछाइत गप-सप्प शुरू भेल। ओना, अपना मनमे बनले छल जे हमरो काज बनले हएत। किए तँ रतनलाल भाय

समाजक ओहन आशा छथिए जे जहिना अनरनेबा, गुलैर आ सपाटु[19]क गाछ बारहो मास फलसँ लदलो रहैए आ ओही बीच फड़ितो अछि आ पकितो तँ अछिए।

ओना, काज करैक ढंग रतन भाइक पतियानी लगाइये कऽ छैन मुदा पतियानीक बीच अलग पतियानी हुनकर रहै छैन। ओ ई जे काजक मुँह-कान देखि काजकेँ अगुएबो करै छैथ आ पछुएबो तँ करिते छैथ। ऐठाम एकटा भ्रम अछि, ओ अछि जे मुँह-दुब्बरक तँ काज पछुएबे करत। मुदा रतन भायकेँ अपन जिनगीक शब्दकोषो छैन आ कर्मकोषोओ छैन जे काजक महत् देखब ओकर मुँह-कान देखब भेल। केहेन काजक केहेन अनिवार्यता अछि, ओइ अनुकूल हुनकर काजक पतियानी छैन।

चाह पीला पछाइत रतन भाय गप-सप्प शुरू केलैन। ओना, अपनो ई बात बुझले अछि जे जहिना-जहिना लोक सभ आएल छैथ तहिना-तहिना गप-सप्पक क्रम चलत। पहिल आदमीकेँ बेमारीक प्रश्न रहैन, साल भरिसँ बेटा बीमार छेलैन, अनधुन खर्च भेला पछातियो बेमारी ओहिना-क-ओहिना बनल अछिए, तँए नीक डॉक्टर[20] ऐठाम जेबाक विचार करब छेलैन।

गप-सप्प उठल, कौल्हुका समय रतनलाल भाय बना लेलैन। हुनकर विचार भेला पछाइत दोसर आदमीक प्रश्न छेलैन जे हमर बेटा आइधरि कहियो स्कूलसँ कौलेज धरि फेल नहि केने छल से केना फेल भऽ गेल? तहूमे जँ कनी-मनी नम्बरसँ एकाध विषयमे फेल रहैत तँ मानलो जा सकैए मुदा आधासँ बेसी विषयमे शून्य नम्बर आएल छइ। हुनको आश्वासन दैत रतन भाय बाजल छला-

---

[19] चिक्क

[20] ऐठाम नीक डॉक्टरक माने भेल रोगक विशेषज्ञसँ

“देखियौ, शिक्षा विभागमे तेहेन अराजक स्थिति बनि गेल अछि जे किछु कहब अपने मुँह दुइर करब हएत, मुदा छोड़ियो देब नीक नहियेँ हएत। सातम दिन पटना जाइबला छी, ओही दौड़मे अहूँ चलब आ सभ बात बुझियो लेब आ जे नीक हएत से करबो करब।”

हमरा छोड़ि आरो गोरेक–शेष पाँचो-छबो गोरेक–काज पहिलुका नहि छेलैन आगूक छेलैन, तँए हुनका सभ दिससँ नजैर उठा रतन भाय हमरा दिस देलैन। ओना, अपन मन तखन आगू-पाछू हुअ लगल छल। आगू-पाछू होइक कारण भेल जे कौल्हुका समय भगवानक परसाद जकाँ रतन भाय बाँटियो लेलैन आ अपनौं रजिष्ट्रीक कौल्हुके विचार करि समय देने छैथ..! मुदा तैयो मनकेँ समेट बजलौं-

“रतन भाय, हमर विचार काजक धुनिमे हेरा गेल आकि मोन अछि?”

रतन भाय व्यंग्यमे बजला-

“मोन अछि, एना किए बुझै छह, मन तँ अछि जे सबहक कल्याण एक्के दिन एक्के क्षण भऽ जाइ मुदा अपन मन रहने थोड़े हएत। बिसरब किए, तखन तँ अपनाकेँ काजक लोक बनबए चाहै छी जे अकाजकसँ सुधरब, मुदा से अपने मने नै ने हएत।”

रतन भाय की उत्तर देलैन से नीक जकाँ बुझबो ने केलौं, मुदा तैयो मनकेँ थतमारलौं। थतमारलौं ई जे जेतबे पानिक खगता अछि ओतबे पाइनिक ने जोगार करैक अछि आकि तइले समुद्र सभकेँ उपछैले जाएब। हमरा कि कोनो अगस्त मुनि जकाँ पियास लागल अछि जे समुद्रेकेँ पीब जाएब। बजलौं-

“भाय, अहाँकेँ ते कहने छी जे बोरिंग लगहक खेतक बदलैन

अपन दोसर बाधक खेतसँ करब। हुनको नीक हेतैन जे अपना बोरिंग लग खेत बेशिया जेतैन आ अपनो बेशिया जाएत जइसँ खेतियो-पथारी करैमे आ ओगरवाहियो करैमे नीक हएत। देखिते छिऐ जे जेरक-जेर सराधक उसरगलहा झड़खण्डी साँढ़ सभ भरि दिन बाधमे वौआइत रहैए, तैपर सँ सुगरो, नीलो गाए आ बानरोक उपद्रव बढ़िये गेल अछि। तँए खेतक ओगरवाहि सेहो खेतीक अनिवार्य अंग बनियेँ गेल अछि।”

रतनलाल भाय बजला-

“हँ से तँ बढ़िये गेल अछि मुदा मनुक्ख जँ ओइ सभसँ हारि मानि लिअए, सेहो केहेन हएत।”

अपन विचार दिस रतन भायकेँ खिंचैत बजलौं-

“कहने जे रही, ओइ जमीनक बदलैन करैबला भाँज कनी नीक जकाँ बुझि लेब।”

जेना कियो निछोह दौड़ल जाइत हुअए आ ओकरासँ जे कोनो बात पुछैक रहैए तँ कनी दूर दौड़िये कऽ या नइ तँ अपन विचारक शब्दकेँ काटियो कऽ लोक बजैए तहिना रतन भाय बजला-

“जमीन-जालक ओझरी कि कोनो एक दिनक छी जे लगले सोझरा जाएत, एगारहमी शताब्दीसँ जमीनक जालो आ तमाशो लगले अछि। मुदा उपायो बड़ भारी नहियेँ अछि। जहिना मनुक्ख देशक छी तहिना ने खेतो छी। जइ खेतमे जे काज करैबला अछि, ओकरा जिम्मामे ओ खेत भेल।”

बजलौं-

“अनेरे कोन महाजालक बात रतन भाय कहै छी। अपना विषयमे कहू ने।”

रतनलाल भाय बजला- “तोहर प्रश्न तँ फूलोसँ हल्लुक अछि। खरीद-बिकरी नइ ने छी, अदला-बदली छी। मुंशीजीकेँ मोन पाड़ि देबैन। बस! भऽ गेलह तोहर काज।”

❑ *शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019*

सोरहामे सुर्रा लगि गेल

जागल किसान छी जे अहाँ भलेँ नइ बुझैत होइ तँ किनकोसँ पुछि लियौन। गौंओ-घरुआ आ चौबगलीक लोको नहि बुझै छैथ से बात नहियेँ अछि। अपनो मन एते मानिते अछि जे जँ जागल नइ छी तँ आगूए-आगू बुझै केना छी। देखिते छिऐ जे जखन खेतो-पथार सुति रहैए...।

सुतबक माने ऐठाम ई जे या तँ खेत परती अछि वा जइ फसलक जे मौसम नहि रहल तखुनका सुतब, तखनो अपने दरबज्जाक चौकीपर सुतले-सुतल माने पड़ले-पड़लक अवस्थामे मोन पाड़ैत रहै छी जे ऐबेर गाछी लगाएब, जखन गाछी लगबैक विचार मनमे उठैए तखन मने ने मनकेँ मोन पाड़ैत बुझबैए जे कातिकक गाछी जहिना 'अदहा' आ बाछी 'दोबर' होइए तहिना चैतक गाछी 'दोबर' आ बाछी 'अदहा' होइते अछि।

कहब जे ई की भेल? भेल ई जे आमक गाछ लगौनिहारक कथन छैन जे जँ कातिकमे आमक गाछ लगाएब तँ पटबैयोमे आ तामो-कोर करैमे अदहे मेहनत लगैए, तँए गाछक फड़ो[21] अदहे होइए मुदा चैतक गाछीक विशेष गुण छै जे सभ साल फड़ितो तँ अछिए। भलेँ पटबौ बेसी पड़ए आ तामो-कोर बेसी करए पड़ए।

खेतीक विषयमे लोक (माने किसान) पुछै छैथ- 'भैया, धानक बीआ कहियासँ पाड़ब शुरू करबहक?' तखन जँ जागल नहि

[21] माने गाछ अधे-अधी फड़बो करैए

रहब तँ केना अपनो बीआ पाड़ब आ अनको पाड़ैले कहब?

जहिना खेत सुतल अछि तइसँ कि खेतिहरक नीन कम पातर छइ। देखबो तँ करिते छी जे तेहेन-तेहेन होशियारि बेटी सभ किसान परिवारमे आबि गेल छैथ जे गरमा धानक बीआकेँ शीतकालिन धान कहि कियो खेतीकेँ सुतबै छैथ तँ कियो शीतकालिन कहि गरमाकेँ, खाएर जे अछि जेतए अछि ओ कटि गेल दहेजक तरे।

ओना, अपनाकेँ जागल किसान केना नइ बुझब? जँ कियो मुहेँपर कहैथ जे ‘गाममे अहाँ सभसँ जागल किसान छी?’ तँ कि हुनका कहबैन जे ‘यौ भाय, जागल तँ हम ओतबे छी जे नीक केकरा कहै छै सेहो ने बुझै छी..!’

मुदा जँ कियो आदरसँ किछु कहैथ तँ तेकर अवहेलनो तँ नहियेँ हेबा चाही। जँ अपनाकेँ ओइ-जोकर नइ बुझैत होइ तँ ई भेल अहाँ जीवनक टास्क। अहाँकेँ ओइ दिस बढ़ि जेबा चाही। आ ताधैर बढ़ैत रहक चाही जाधैर ओइ सीमापर नहि पहुँच गेलौं।

ऐठाम एकटा दोसरो बात अछि। ओ अछि जे अपना ऐठाम किसान शब्दक चेहरे बदैल गेल अछि। एक दिस किसानकेँ सभसँ ऊँच नजरिये देखल जाइए, माने प्रतिष्ठासँ प्रतिष्ठित कएल गेल अछि तँ दोसर दिस किसानी जिनगीक रूपकेँ अरूप बना उच्च-सँ-उच्च सरकारियो आ गैर सरकारियो स्तरपर अपन अपना जिम्मामे समय नहि लगा रहल छैथ सेहो तँ ‘नइ’ नहियेँ कहल जाएत। तैबीच जँ अहाँ साइयो-साए बीघा पैतृक सम्पैत रखि अपन समय नोकरीमे लगबै छी तखन किसानी जिनगी केते बेतीत करै छी, से अपनो मन कहिते हएत।

खाएर जे अछि से अछि अपन तँ जागल किसानक चेहरा

अछिए। भलेँ सुतल जागल छी आकि जागल सुतल छी, कि जगले सुतल छी आकि सुतले जगल छी ई दीगर भेल। एतबे जागल बुझू जे कोन समयमे कोन तरहक किसानी जिनगी चलैए, बस तेतबे बुझू। आरो जानत अपन किसान जे गामक गाममे साइयो-साए बीघा आमक गाछीमे बरदारल अछि आ ओइसँ सालमे केते दिनो आ केते फलो भेटैए से अपन अपने ने जानह। एक दिस साल भरिक उपज मरि जाइए आ दोसर दिस किसान महराइ गबै छैथ जे बाइस इस्वी तक किसानक जिनगी दोबरा जाएत।

जैठामक किसान अखनो गाममे बोन-झाड़–सागबानसँ लऽ कऽ शीशो-सखुआक संग काँटक बोन-झाड़–लगा-लगा परवासी भेल जा रहल छैथ आ हुनका एतबो ने दरेग छैन जे गामक लक्ष्मी बोनाएल जा रहली अछि आ अपने मिथिला नगरीक डगरी बजा-बजा गुण-गान करै छी।

दस बीघा बपौती सम्पैतमे एक बीघा केराक खेती हमहूँ हो-हामे कऽ लेलौं। ओना, ओ जमीन चौमास छी, जइमे सालो भरि कोनो-ने-कोनो फसल लगले रहैए। बीआ अनलौं। हाँइ-हाँइ कऽ बोरिंग गड़ेलौं।

जइ दिन बीआ–केराक पौंच–अनैले गेल रही तही दिन हाँजीपुरक एकटा करजानमे खेतमे भरि-भरि छाती केरा गाछक बीच मुरेठा बान्हि किसान बनि फोटौओ खिचेलौं। दुनियाँक लोक फोटोमे देखबो केलक आ कानसँ भाषणो सुनलक।

जहिना अपना ऐठाम, जखन बच्चामे बिआहक चलैन छल आ चारि-पाँच बर्खमे बेटा-बेटीक बिआह होइत रहइ, तखन जहिना लड़कोकेँ माए-बाप अपन माने माता-पिताक नाओं सिखा घरदेखीक प्रश्नक तैयारी करबै छला तहिना ने लड़कीकेँ सेहो माए-बाप सिखबै छला। ओहिना अपनो दुनियाँ भरिक सिखौनिहार–माने

केरा खेतीक–सभ एकठाम भइये गेल।

मुदा संजोग कहियौ कि दुरयोग, समैयक अभाव रहने सिखौनिहारक सीख सेहो मनेमे रहलैन आ अपनो जान बँचल जे दस गोरेक बीचमे अनाड़ी किसानक परिचय नहि दऽ पौलिऐ।

खाएर जे भेल ओ अपन बीचक भेल तँए सभकेँ मने-मन रहब नीक।

समाचारक समदिया सभ अपन-अपन यंत्र-पाती नेने पहुँच कहलैन-

“अहाँकेँ ते अपन नाम आ पिताक नाम, गाम-पता तँ बुझले अछि। बाजू।”

समदियाक समाद सुनि देह कारी झाँमर आ मन कोयला भऽ गेल जे ई–समदिया–एते बेकूफ बुझैए जे धिया-पुताक घरदेखिया जकाँ नाम-गाम पुछैए। मुदा अपनो मन थीर रहैत तखन ने, से तँ हवा-मिठाइ जकाँ फुलि कऽ तुम्मा भइये गेल रहए। ओना, ने अपनाकेँ हारल सन बुझैत रही आ ने जीतल सन, जहिना अपन बनाएल संस्था सरकारी छी तहिना ने ओइ संस्थाक हमहूँ भेलिऐ, तैबीच विचार-सँ-बेवहार धरिक तँ सम्बन्ध बनाइये कऽ ने राखए पड़त...।

अपन नाओं आ पिताक नाओंक संग गाम-पता सभ बजलौं।

ओना, बीच-बीचमे ओ–समदिया–बाजब रोकि, अपन यंत्र-पातीकेँ कनैठी सेहो दिअ लगै आ पुन: पुछबो करए।

आधा घन्टा तक पुछ-पाछ चलैत रहल। भरिसक एकटा रील कैमराक भरि गेल, तखन ओ सभ जान छोड़लैन। तीनियेँ दिनमे दुनियाँ भरिमे सफल किसानक माइन भऽ गेल। गाछक सोर जकाँ धरतीमे सरसरा कऽ निच्चाँ धरि पहुँच गेलौं।

केरा पौंच रोपबक तेसर मास छी। एकटा समदिया आबि एकटा कोठरीमे लऽ गेला। केरा गाछक रंग-रंगक फोटो सौंसे घर टाँगि देलैन आ बीचमे फोटौओ लेलैन आ गपो-सप्प केलैन।

तेसरा दिन भने केराक सफल किसानक रूपमे पुरस्कारो सभ भेटए लगल। ई एक पक्ष भेल, माने अपन सोरहा (सफल किसानक) दुनियाँमे केना भेल।

दोसर पक्ष अछि जे जइ दिनसँ ऐ पाछू (माने केराक पाछू) पड़लौं तहियासँ रंग-रंगक पश्न सभ सोझहामे आबए लगल। मुदा जेहने मुँहजुआनी प्रश्नकर्त्ताक प्रश्न तेहने मुँहजुआनी जवाबो दैत रहलौं।

संजोग भेल, तेसर मासक–माने केरा-पौंच रोपैक तीन मास पाँच दिन–पाँचम दिन लालमोहन भाय जिज्ञासामे पहुँचला। ऐठाम भाय स्पष्ट करए चाहै छी जे जिज्ञासा खाली दुरघटने टाक नहि होइए, सुघटनाक सेहो होइते अछि। अनका लग तँ बाँहि बगैल कऽ सकै छी मुदा लालमोहन भाय लग तँ से नहि चलत। ओना, हवा-बिहाड़िमे जहिना छाती चौड़गर भऽ गेल छल तहिना कन्हा सेहो चौड़गर भइये गेल अछि, तँए निधोख बजलौं-

"लालमोहन भाय, तीन माससँ दूटा नोकरक खर्च बढ़ि गेल अछि, जे काज अपना-ले अराधलौं, ओइ काजकेँ करैमे एते बेवधान उपस्थित भऽ गेल अछि जे दोसरपर आश्रित जीवन पहुँच रहल अछि।"

लालमोहन भाय बजला- "से की?"

हारल नटुआ जकाँ बजलौं-

"भाय साहैब, जहिना अपन रोजगार-ले खेतीक विचार केलौं, तहिना जिनगी ओमहर घुसैक रहल अछि जेमहरसँ अपना हाथमे

फेर काज नइ औत!”

लालमोहन भाय बजला- “बहुत नीक केलह। जे केरा रोपलह अछि, ओ सालमे केते पीढ़ी तक फल देत।”

लालमोहन भाइक बात सुनि बजलौं-

“भाय साहैब, जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया। फाँटिपर चढ़बे केलौं अछि, अपन असिरवाद दिअ।”

असीरवाद सुनि लालमोहन भाय ठकमला। मनमे कि उठलैन से तँ लालमोहने भाय जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे कोनो गहींरगर (गम्भीरगर) विचार मनमे जगि रहल छैन। ओना, मनक बात ओ व्यक्त नहि करए चाहै छला, मुदा अपने मनमे मनान्तर हुअ लगलैन। एक मन कहैन जे अनेरे अखन दुनियाँ भरिक विचार राखब नीक नहि हएत तँ दोसर मन कहैन जे वस्तुस्थितिक विचार जँ जगहपर (बखतपर) नहि करब तँ ओ मुँहचोरक काज भेल। सभ किछु अपने जनै छी, एहेन बात नहियेँ अछि मुदा एहेन तँ अछिए जे जे जनै छी से जरूर बाजी। कमसँ कम एते तँ हेबे करत किने जे दस गोरेक मुहसँ दसटा बात निकलने दस रंगक विचार एबे करत।

ओही विचारकेँ दस दिससँ काटि-छाँटि, लकड़ीक रोल (लकीर खिंचैबला) जकाँ, सुन्दर आ सुगोल सेहो बनबे करत...।

विचारमे गम्भीरता अनैक खियालसँ लालमोहन भाय बजला-

“सुधीर, अपनाकेँ हम ओइ-जोकर कहाँ बुझै छी जे तोरा असीरवाद देबह।”

लालमोहन भाइक विचार सुनि अपनो मन सरसरा कऽ तर-मुहेँ जाए लगल। तरमुहेँ जाइक कारण भेल जे जखने कियो अपन गुणक-संग अवगुणोक चर्च करत तखन गुण-अवगुणक बीच एकटा लकीर स्वत: खिंचा जाइए। ओही लकीरपर ठाढ़ हएब मनुक्खक

चरित्र भेल। बजलौं- “लालमोहन भाय, दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, एके वस्तु केकरो नीक जकाँ अरघैए आ केकरो एको पाइ नहि अरघैए, तँए कि कहबै ओ वौसे अधला अछि।”

हमर बात सुनि लालमोहन भाइक मन सेहो तरिया लगलैन। तरियाइते मुहसँ मुस्की फुटलैन। मुस्कीक संग बजला-

“सुधीर, लोकक बीच जे चलैन अछि ओइ हिसाबे तोंहू ठीके बजलह। मुदा जखन शब्द सागरमे अनुराग सागरक मन बना ढुकि कऽ देखबहक तखन ने शब्दक मुँहक मोती फुटल देखबहक। मुदा अखन समय दोरस अछि तँए अखन ओमहर नहि अपन खेती दिसक विचारमे आबह।”

खेती दिसक विचार सुनि अपनो मन कलशल। ओना, तीन मासक रमझौआ काज मनकेँ तोड़ि रहल छल, अपनो बुझि पड़ए लगल जे नइ चौंसैठअना तँ बतीसअना कोढ़ि जरूर भऽ जाएब। जखने कोढ़िया रोग पकड़त तखने निकम्मा भइये जाएब। बजलौं-

“भाय साहैब, अहीं सभ ने धारमे भँसियाएल लोककेँ बाँहि पकैड़ महारपर अनबै।”

हमर बात सुनि लालमोहन भाय आरो गम्भीर भऽ गेला। जेना अतीत दिस भँसि गेला तहिना बजला-

“सुधीर बौआ, अपन देश अटूट सम्पदासँ भरल अछि, केतबो विदेशी लुटलक तैयो देशाक जे सृजनशक्ति अछि ओ एते प्रवल अछिए जे अखनो अपन देश सोनाक चिड़िया बनले अछि।”

लालमोहन भाइक बातमे वौआ गेलौं। अपन ठेकाने ने रहल जे लालमोहन भाय की कहि रहला अछि आ अपने की बुझि रहल छी। अनायासे मुहसँ निकैल गेल-

“से की भाय साहैब?”

विचारक रसमे हमरा डुमल बुझि आकि अपन विचारक रस डुमल देखि लालमोहन भाय बजला-

"बौआ, जखन अविकसित रूपमे माने पछुआएल रूपमे मशीन छल तखन पैंतालीस प्रतिशत कृषिसँ जुड़ल छल, जखन कि आजुक जे मशीनक परिवेश बनि गेल अछि ओ कृषि उत्पादित विन्याससँ अस्सी प्रतिशतसँ ऊपर पहुँचैक स्थितिमे आबि गेल अछि।"

लालमोहन भाइक बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, बजलौं-

"मारू मुँह ऐ दुनियाँकेँ। अपन दुख-धन्धाक गप-सप्प करू।"

लालमोहन भाय टोनियबैत बजला-

"केराक जे खेती केलह ओकर एकटा वंश सालमे केते घौड़ देत?"

झूठ केना कहितिऐन जे भाय बुझल अछि, अपन पल्ला झाड़ैत बजलौं-

"भाय साहैब, अखन तँ जमीनपर पएर रखबे केलौं अछि। नीक जकाँ रोपेबो ने कएल अछि तखन आगूक बात केना कहब।"

लालमोहन भाय बजला-

"अखन हमहूँ जाइ छी, फेर आबए।"

❑ *शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019*

अगराही

फागुन अपन अन्तिम अवस्थामे आबि चुकल छल मुदा फगुआ पछुआएल रहने अन्तिम साँस कहुनाकऽ बँचौने छल।

कहब जे अहाँ केना बुझलिऐ जे ओकर अन्तिमे साँसटा बँचल अछि?

अपना सबहक जे बेवहार गणित अछि, जइमे धुर-कट्ठा-बीघाक हिसाब अछि, लग्गी-डण्टाक हिसाब अछि अपन-अपन अछि। माने जैठाम बेसी हाथक लग्गी अछि, ओइठाम धुरो-कट्ठा नमहर अछि आ जैठाम सगतोरा लग्गी अछि तैठाम तँ सगउपजे खेत ने बेसी रहत। मरदनमा लग्गी नेपाल सरकारक अछि जे जँ केकरो पुछबै जे 'भाय, फल्लाँ गाम केते दूर अछि?' तँ ओ जवाब देत जे 'लिगरे है लिगरे।' लग्गा लिगरे बनि गेल कि लिगरे लग्गा बनि गेल से बुझिये ने पेब रहल छी। खाएर जे जेतए अछि ओ ओत्तै अबाद हुअ।

फागुनक अन्तिम साँस नपैक एकटा दोसरो थर्मामीटर अछिए, जे मासे-मासक पाबैन-तिहारक हिसाब बनौने अछि। जइसँ जे पाबैन शुरू वा मध्यमे भेल ओ मासक अगता भेल आ जे पाछू होइए ओ पचता भेल।

पचता काज केनिहार, चाहे जे क्षेत्र हुअ, ओ तँ अपन अन्तिमे साँस गनि फगुआक रंग देखए चाहैए। खाएर जे अछि, एते तँ अछिए जे फागुनक फगुआ मासक अन्तिम साँस गनि मास बदलबे

करैए।

झंझारपुरक अन्तिम हाट फगुआकेँ पकड़ाइ छल, औझुके हाटमे लोक फगुआ पाबनिक सभ ओरियान करत। धिया-पुता-ले केमिकल-रंगो आ केमिकल-अबीरो कीनबे करत।

हाटपर सँ घुमल बुधनी दादी आ सुधनी दादी अबै छेली। बलियारिक पच्छिम नहरक कातक गाछक निच्चाँमे बैस समयकेँ दोखी बनबैत सुधनी दादी बजली- “जनपिट्टा! केहेन समय भऽ गेल जे फगुआसँ पहिनहि एना जरबैए। अखन ठीकाठीक दुपहरियो ने भेल अछि तइसँ पहिनहि रस्ता सभ भको-भंग भेल जा रहल अछि!”

सुधनी दादी जेहने सोझमतिया लोक तेहने सोझगर चालियो आ बोलियो तँ छैन्हे। ओ किए बुझती जे ऐबेर ने नमहर शीतलहरी भेल आ ने मघाइर पानियेँ भेल जे जरकल्लाकेँ पकड़ने रहैत।

अपन आक्रोश सुधनी दादी जखन बोकैर चुकली तखन मनो थीर भेलैन आ जिज्ञासाक जगहो थीर भेलैन, बुधनी दादी बजली-

“कहियासँ अपना दुनू गोरे पएरे झंझारपुरऽ हाट अबै छी, माने केते दिनसँ?”

ओना, सुधनी दादी ऑंगुरपर हिसाब नहि जोड़ए लगली से बात नहि, ओ अपन दहिना-बामा हाथ अजबारि आँगुरपर हिसाब जरूर जोड़ए लगली मुदा बीचमे जे आँगुर फुटि जानि तइसँ हिसाबे छुटि जाइन। तँए केतबो नाक दरड़ली मुदा हिसाब नहियेँ भेटलैन।

हिसाब नइ भेटने सुधनी दादीक मुँहक पटमे पट-पटी एबे ने केलैन। एक तँ फागुन मास दोसर पुरबा हवाक लहकीमे गाछक निच्चाँमे दुनू गोरे बैसले रहैथ तँए कनी-मनी मनो अलिसाइते रहैन।

सुधनी दादीक अलिसाएल मुँहक हाफीसँ बुधनी दादीकेँ बुझि

पड़लैन जे आब ई फगुआक मोटरियेपर मुड़ी रखि ने कही सुति रहैथ। जखने से करती तँ अनेरे भारी पहपैट हएत।

पहपैट ई हएत जे काँच नीन टुटने बोखार अबैक सम्भावना बढ़ि जाइए। जइसँ अनेरे पापक भागी बनब। बुधनी दादी बजली-

“बहिन, गाममे की सभ होइए, से सभ किछु कहबे ने केलौं आ पहिने हफुआ कऽ सुतैये चाहै छी?”

बुधनी दादीक बातक सभ अंश सुधनी दादी सुनलैन कि नहि आकि सुनबे केलैन तँ बुझलैन कि नहि, से सुधनी काकी जनती। मुदा अन्तिम बात जरूर सुनलैन जे ‘हफुआ कऽ सुतए चाहै छी!’ तँए अक्-चक् करैत सुधनी दादी बजली-

“नइ! सुतै कहाँ छी।”

ओना, बुधनी दादी बुझि रहल छेली जे सुधनी दादीक बोलीक झमार सुपुट गवाही दइ छेलैन, नइ तँ बोलमे ओल केना घोंसियाएल जे कबकबाएल बुझि पड़ैए। मुदा तैयो बुधनी दादी अपन धैर्यकेँ धीरपर रखैत, टंगटुट्टा बबाजी सभकेँ जहिना संगी-मेड़िया सभ संग-संग घीचो-तीर करैत रखिते छैथ, जहिना टंगटुट्टा घोड़ो-घोड़ी आ टंगटुट्टा महींसोपर नट-बक्खो अपन घरक सभ माल-असवाब लादि संग-संग चलैबिते अछि तहिना बुधनी दादी सेहो अपन छातीपर पाथरक सिलौट रखि सुधनी दादीक आगू लोड़ही चलबैत बजली-

“बहिन, फगुआ कहिया छी?”

सोझमतिया सुधनी दादीकेँ अपना मनमे अपन सोझपन भवलैन। भवलैन ई जे कोनो पाबैन आकि कोनो डिग्रीए-डिप्लोमाक प्रश्न किए ने हुअए, मुदा जहिना पाबनिक ओरियान भेला पछाइत अपन पाबैनक पौना पबिते बिसरा जाइ छैन तहिना

सुधनी दादीकेँ सेहो भेलैन। कहियाक विचार तँ ओकरा-ले छै जे परीक्षामे नइ बैसल अछि वा पाबनिक ओरियान नइ भेल छइ। सुधनी दादी अपन हिसाब जोड़बैत बजली-

"बहिन, खाइ-पीबैक अन-पानि घरेमे अछि, किए तँ दू रुपैये गहुम आ तीन रुपैये चाउर भेटने खेतमे अगराही लगौ कि पत्थल खसौ, तैयो भइये गेल। आउर चीज-वौस सेहो भइये गेल, तँए पाबैन आइ हौ आकि काल्हि हौ, जहिया हएत तहिया हुअ।"

ओना, ई कहब जे बुधियारे लोक बुड़िबककेँ ठकैए से बात नइ छै, बुड़िबको लोक बुधियारकेँ ठकिते अछि, मुदा जे ठेकनगर अछि ओ अपन ठेकानसँ ठेकनाइये लइए आ जे से नहि अछि, तेकरा ने ठेकान करऽ पड़ै छै जे एकेबेर अन्तिम सीमापर पहुँच कियो गाइयक नाँगैर पकैड़ तँ कियो सिमरिया घाटक जलसँ सिक्त भए तँ कियो गरदैनमे कण्ठी बान्हि अपन बेड़ा पार करए चाहिते अछि...।

सुधनी दादीक मुहसँ सुनल 'अगराही' शब्दकेँ अँखियबैत बुधनी दादी पुछली-

"की अगराही?"

अपन धुनिक सुधनी दादी छथिए, एक्केबेर खेतसँ कुदि हाट-बाजार दिस पहुँच बजली-

"सभ दिन हाट-बजारमे अगराही लगले रहैए।"

ने सुधनी दादी बुधनी दादीकेँ ठेकना पबैत रहैथ आ ने बुधनी दादी सुधनी दादीकेँ। तइ काल हमहूँ पहुँचलौं।

गामक दुनू बुड़हीकेँ गाछ लग बैसल देखिते, अपन मन कहलक जे हिनका सभकेँ छोड़ि अपने पहिने गाम पहुँच जाइ, ई उचित नहि। मनो रोकलक आ मिजाजो तँ अगिआइये गेल छल,

तैपर छाहैर सेहो देखलिऐ। साइकिलसँ उतरैत सुधनी दादी दिस तकैत बजलौं-

"की अगराही?"

अपना मनमे 'अगराही' शब्द गड़ैक कारण भेल अगराही अपनो विसाएल अछिए। गामक किछु युवा पीढ़ी अपन सड़ल-गलल बेवहारकेँ बदलैक विचार जुट बना केलैन। डेग उठैबते गाम पुलिस-दरोगाक अड्डा बनि गेल छल। तहू दिनमे बुढ़-बुढ़ानुस सभ कहिते रहैथ जे गाममे फल्लाँ-फल्लाँ अगराही लगौलक।

सुधनी दादीकेँ टुसकी दैत बुधनी दादी बजली-

"बौआ की कहैए से सुनियौ।"

बुधनी दादीक टुसकी पबिते सुधनी दादी बजली-

"बौआ, की कहबह! देखै छहक ऐ रंग आ अबीरकेँ जे एक चुटकी हम सभ ओहिना दइ छेलिऐ से भेल हेन दू साए रुपैआमे। तेतबेसँ धिया-पुता थोड़बे मानत ओ तँ रंग छिटैले फुचकारियो मंगबे करत।"

प्रश्न-पर-प्रश्नकेँ झहरैत देखि मनकेँ आरो झहरैसँ रोकि बजलौं-

"दादी, हमहूँ साइकिल गुड़कबिते चलै छी, चलू सभ कोइ गप-सप्प करैत।"

तीनू गोरे संगे-संग घरमुहाँ डेग उठेलौं।

❑ *शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019*

जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा

चारि-पाँच माससँ पता लगि रहल अछि जे हरजीत काका बीमार चलि रहल छैथ। ओना, बीमारियो कि कोनो एक्के रंगक अछि जे एक्के थर्मामीटरसँ काज चलत। बीमारियो तँ बीमारिये छी जे रंग-रंगक, अनेको रंगक अछिए। जेना काजक व्यस्तता बुझू आकि कोढ़िपन, एक घन्टा समय हरजीत काकासँ भेँट करैले नहि दऽ पाबि रहल छी। मुदा आइ भोरे मनमे जगिकऽ रोपा गेल जे खेनाइ-पीनाइ भलेँ छुटि जाए मुदा हरजीत काकाकेँ भेँट जरूर करबैन। भेँटक काल जँ ओ कहबो करता जे 'चारि-पाँच माससँ ओछाइन धेने छी!' तँ अपन मौगिपन चालि पकैड़ कहबैन, 'काका, अहाँ बीमार छी आ हम बुझबे ने केलौं..!'

ओना, जेना रस्ता-घाटमे दिनमे तीन-चारि बेर जरूर भेट होइ छेलौं, जे किछु दिनसँ नइ होइ छी। तेकरो तँ गर अछिये जे कहबैन- 'काका, धुमै-फिड़ै तँ हमहूँ छी मुदा जेना पहिने एक समयमे एक घाटपर आ एक बाटपर भेँट होइ छेलौं, तइमे कनी कबैया-ड्योढ़ भऽ गेल अछि तँए भेँट नइ होइ छेलौं... ।'

मन मानि गेल जे आइ हरजीत कक्काक भेँट जरूर करबैन। भेल तँ! भेँट करैमे लगले कि अछि, जिनकासँ भेँट करए जाएब तिनका आगू कनाह नइ बनी। से तँ हरजीत कक्काक संग नहियेँ अछि। जहिना ओ हमरा मानै छैथ तइसँ कि कम हम हुनका मानै छिऐन।

जखन दुनू गोरेक बीच मान-मनोअल अछिए तखन रस्ता-बाटमे घटने-दुरघटना कि अछि जे मुँह नुका आँखि मुनि मोड़ि राखब?

आँखि मिड़िते ओछाइनपर सँ उठि पत्नीकेँ कहलयैन-

“एकटा हलतलबी काजमे पड़ि गेल छी तँए जाबे हमहूँ मुँह-कानमे पाइन लइ छी ताबे अहूँ चुलही पजारि चाह बना लिअ। एको मिनट बिलमए नइ चाहै छी।”

ऐठाम एकटा शब्द अछि, हलतलबी काज। अपन पुरुषार्थ जगा जहिना सभ पति पत्नीकेँ देखबै छैथ जे हमरोमे पुरुखपन अछि तइसँ कि हम कात छी आकि अही बीचमे हमहूँ छी। तँए पत्नीकेँ हल-हलबैत ‘हलतलबी’ शब्दक प्रयोग केलौं। मुदा से सुतरल। जहिना अपने धड़फड़ाइत बाजल रही तहिना पत्नियोँ अपन पाँखि फड़फड़बैत चुल्हि लग पहुँच गेली। दुनू गोरे दुनू दिस भऽ गेलौं।

चाह हाथमे अबिते मनमे भेल जे पत्नीसँ छुट्टी लऽ ली जे हरजीत काका ऐठाम जा रहल छी, चारि-पाँच माससँ भेँट नहि भेला हेन तँए समैयक कोनो ठेकान नहि रहत। तइले मनमे कोनो अन्देशा नइ करब। मुदा फेर लगले भेल जे, ओह! यात्रा ने भङ्गैठ जाए। किए तँ नारियो सागर कि कनियेँटा अछि, जँ कहीं ओही सागरक लहैरिक बालुमे पड़ि पत्नीक काने भथा गेल होनि आकि उल-जुलुल खढ़-पातक ढेर जमा भऽ गेल होनि, तखन तँ अनेरे ने मनमे हरजीत कक्काक प्रति खटरस पैदा हएत। तइसँ नीक जे ने किछु अपने बाजब आ ने ओ बजती, भने पौतीमे तहिया कऽ दुनू गोरेक राखल रहत। हुनकर पौती चिचिएतैन किछु आ अपन चिचियाएत किछु..!

भाय, लोक अपन चिचियाएब जँ सुनबे ने करैए वा सुनि कऽ

बुझबे ने करैए वा जँ बुझबो करैए तँ तेहेन अन्हार पसरल छै जे सुझबे ने करतै तखन तँ... ।

खाएर निर्णय पक्का करैत चाह पीब उठि कऽ विदा भेलौं।

गामे छी, गामक वस्त्र देहपर अछिए। कोनो कि ओहन गौंआँ छी जे गामेमे पाहुन जकाँ बनल रहब।

मनसँ जेना सभ किछु हेरा गेल, खाली रहल मनमे हरजीत काकाकेँ ओछाइन धड़ब। लोकोकेँ कि बजैक कोनो ठेकान अछि, जँ कहीं हरजीत काका अपन बाहरी काजकेँ समेट दरबज्जेपर लऽ अनने होथि, जइसँ घुमब-फिरब कमि गेने लोके सभ बाजल हुअए। ..कहब जे एते ततमतेबाक कोन खगता अछि? मुदा खगता नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत, खगता तँ अछिए।

ओना, हरजीत कक्काक घर अपना घरसँ बेसी हटल नहियेँ कहल जाएत, एक्के टोलमे दुनू गोरेक घर अछि मुदा काजक धाम अलग-अलग रहने, भेँट-घाँटक पतराएब सोभाविके भऽ जाइए। किए तँ पहिलुका जे वनधारी ऋृषि-मुनी छला हुनका सभकेँ एक घर-ऑगनमे रहितो दुनू परानीमे किनको-किनको आठ दिनपर तँ किनको-किनको पनरह दिनपर तँ किनको-किनको तीस-तीस दिनपर भेँट होइ छेलैन।

मनमे भेल जे नीक हएत पहिने काते-करोटसँ भाँज-भुँज लगा ली। जइसँ एते तँ हेबे करत जे नइ सोल्होअना तँ चारियो-आठअना तँ थहा जेबे करता। जहिना बहैत अगम पानिक धारमे माइटिक दरस पबिते लोक अपनाकेँ थाहमे बुझबे करैए...। जखने अपन थाह लोक अपने पेब जाइए तखने ओकरा मनमे एते तँ बिसवास आबिये जाइ छै जे जीबै-जोकर अपने भेलौं हेन कि नहि। जखन अपना संगेमे नारियो अछि आ नारीक गति नपैबला हाथेमे आँगुरो

अछि तखन मन किए ने बुझत। जहिना मन देहकेँ आदेश दइए तहिना ने देहो मनकेँ आदेश दइते अछि। जखने कोनो काँट-कुश देहमे गड़ैए तखने ने देह मनकेँ सोर पाड़ि कहैए जे काँट-कुश गरल अछि एकर निमरजना करह।

संजोग कहियौ कि दुरजोग कथी-ले कियो अँगनो-घरमे बजैत भेटता! निड़बुधि भेल मनमे किछु फुरिये ने रहल छल जे हरजीत काकासँ भेँट भेलापर की बाजब?

समझदार लोकक गुण रहल अछि जे दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ पहिने मुँह खोलबै छैथ पछाइत फलस्वरुप कहियौ कि परिणाम स्वरुप खोलै छैथ।

मनमे किछु फुरबे ने करए जे की बाजब? जहिना धारक कातमे ज्ञानी आ अज्ञानीकेँ भेँट भेलैन, जैठाम अज्ञानी कुदि-फानि धार पार भऽ गेल आ ज्ञानी अपन हारि मानि ओकरे देखौंस केलैन तहिना पहिल मनकेँ दबैत दोसर मन विचार देलक जे बाजबोक कि कोनो सीमा-नाँगैर अछि। कहबैन जे काका भेँट नइ होइ तँए मन उघियाए लगल।

मन मानि गेल जे आब हम इन्टर-भ्यू दइ-जोकर भऽ गेलौं।

हरजीत काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर देवालमे ओंगठल बैसल रहैथ। फरिकसँ नीक जकाँ नहि देखि पेलिऐन तँए मनमे किछु उठबे ने कएल। लग पहुँचलापर भेल जे पहिने पएर छुबि प्रणाम करब नीक हएत। जखने शरीरसँ स्पर्श हएत तखन मुहसँ बजैक प्रयोजने की रहल। सएह केलौं।

मुदा हरजीतो काका कि छोट खेलाड़ी छैथ, सौनक लटकल करियेलहा मेघ जकाँ सिर नमरा देलैन।

विवित्र स्थिति भऽ गेल। आन-आन जीव-जन्तु जकाँ कि

मनुक्ख एकसिरा अछि, बहुसिरा तँ अछिए। मुदा लगले कि मनमे फुरल कि नहि, मन मानि गेल जे चुपे रहब नीक। सएह केलौं।

चुप्पी तोड़ैत हरजीत काका बजला-

“बौआ, मन कानि रहल अछि जे जेकरा-ले चोरि केलौं, सएह कहैए..!”

हरजीत काका की बजला से बुझबे ने केलौं, बुझबो केना करितौं। चोर के आ चोरा के से चर्च करबे ने केलैन। इशारामे हरजीत काका बजला तखन ईहो ने आँकए पड़त जे केते इशारामे बजला अछि। कियो आँखिक इशारासँ पॉकेटमारी करैए तँ कियो ऑंगुरक इशारासँ नइ करैए सेहो तँ नहियेँ अछि, सेहो तँ अछिए। तँए मुँहकेँ बन्न केने चुपे रखलौं। जहिना कोनो भुसकौल विद्यार्थीकेँ चरियबैत शिक्षक दोहरा-तेहरा कऽ पुछबो करै छैथ आ कहबो करै छैथ तहिना हरजीत काका चरियबैत बजला-

“बौआ, की कहलियह से नइ बुझलहक?”

एक्केबेर हरदा केना मानि लेतौं तँ अधहरैद कहियौ कि बनहरैद, तत्मताइत बजलौं-

“काका, कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियों बुझलौं।”

बिटगरहा पढ़ल हरजीत काका छथिये, बिटियबैत बजला-

“की बुझलहक आ की नइ बुझलहक?”

अपना मनकेँ सक्कत करैत बजलौं-

“काका, पता चलल जे अपने बीमार भऽ गेल छी?”

जेना गाछसँ खसैत आम वा आने फलकेँ हाथसँ लोकिते खुशी होइए तहिना हमर बात सुनि हरजीत काकाकेँ सेहो भेलैन।

बजला- “बौआ, ठीके सुनलहक हेन जे बीमार छी।”

जखने बीमारक नाओं सुनबै तखने ने मुँह खोलै पड़त जे की सभ होइए?, सएह सोचि बजलौं-

“की सभ होइए काका?”

हमर बात सुनि हरजीत काकाकेँ जेना मनमे सुआस पड़लैन। गुर-घाओक पीज जहिना एक्केबेर ऊपरक चमड़ाकेँ फोड़ि निकलए चाहैए तहिना हुनको मनमे भेलैन जे एक्केबेर चोर कहनिहारकेँ किए ने उकैट दी?

मुदा हरजीत काका अपन उमेरो आ अपन मेघक उमराँओकेँ मनेमे समटैक कोशिश केलैन मुदा गैंची माछकेँ जहिना तरजूपर तौलए लगब तँ एकटाकेँ पकैड़ जाबे तरजूपर राखब ताबे दोसर ससैर कऽ निच्चाँ चलिये जाइए, तहिना भेलैन। बिनु विचारने बजला आकि विचारिकऽ बजला से हरजीत काका जानता, मुदा मुहसँ फुटलैन-

“हएत की कपार..!”

आहि रे बा! एना किए हरजीत कक्काक मन भङ्गठल छैन। होशगर मिस्त्री (इंजीनियर) ने कोनो इंजनकेँ आवाज परेख मात्र ओहीटा पार्टकेँ खोलि लगले दुरुस करि लइ छैथ मुदा जैठाम ओहन मिस्त्री आ ओहन मशीन नइ रहत, माने थौआ-थाकर मशीनो आ अनाड़ी इंजीनियरो रहत तैठामक परिस्थिति तँ विपरीत भइये जाइए। तेहने परिस्थिति ने बनि गेल अछि तँए नीक हएत जे एक-एक पार्ट हरजीते काकासँ किए ने खोलबाबी...। बजलौं-

“काका, अपन उमेरो आ विचारोक ने ठेकान राखब आकि अनधुन तामस मनमे रखने छी। एते मानि लेलौं जे जे अहाँ केलिऐ आ जोहो करए चाहि रहल छी से औझुका लोक नहि रहऽ दिअ

चाहैए, तइले एते तामस किए मनमे रोपने छी? मन हल्लुक करू जे मरबो करब तँ माण्डवी ऋृषि जकाँ बलजोरियो स्वर्ग जेबे करब।"

हमर बातक असैर जेना हरजीत काकाकेँ भेलैन तहिना कि की आकि की पहिनहिसँ अपना मनमे घुमरैत रहैन से ओ जानैथ मुदा बजला एतबे-

"जे समाजो आ लोको छिन्न-भिन्न रूपमे छिड़ियाएल-वितियाएल तेकरा पकैड़ कल्याणक बाटपर अनैमे जिनगी गमेलौं सएह दुसैए। ओना, कल्याणक रस्तापर समाजो आ लोकोकेँ आनैक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सेहो छल, ओ छल तुरत-तुरत देश आजाद भेले रहए आ गाम-गाममे जहिना जनमानस-फौज अंगरेजक खिलाफ तैयारे छल तहिना गाम-गाममे पुलिसोक अत्याचार आ शासनोक अत्याचार सीमा छुबि अपन शक्ति सेहो देखेबे केने छल।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"गाम-गामक एहेन स्थिति छल!"

हमर बात सुनिते जेना चारि गुणा बल हरजीत काकाकेँ भेटल होनि तहिना जानदार शब्दमे बजला-

"कोन गाम एहेन अछि जइमे चाहे आगि नहि लागल हुअए, लोक मारि नइ खेने हुअए वा जहल नइ गेल हुअए, भलेँ ओइ जवाबमे ओहो पुलिसकेँ नइ मारने हुअए, शासन तंत्र रोकि आबागमनक सुविधाकेँ तोड़ि-फाड़ि नइ देने हुअए सेहो बात नहियेँ अछि।"

फेर बजा गेल- "नहि बुझि पेलौं काका?"

जेना हरजीत कक्काक विषियाएल मनमे विषपन कनी कमल होनि तहिना अपन बात अपने मुहेँ बजला- "समाजक कियो जे

अपना मुहेँ बजैए जे फल्लाँ चोर अछि, ओ पहिने बुझि लिअ पछाइत बाजत, जँ से नहि बाजि अपन गड़िमुहेँ बाजत तँ बाजह, केकरो कहने ने कियो चोर बनैए आ ने साधु। सब मनुक्ख अपन-अपन निर्माण अपना बले करैए आ करैत रहत। तइमे जे जेते दूर तक बढ़िकऽ कऽ सकत वएह ने ओहन जीवन पौत जेकर लिलसा मनमे रोपि जीवनक समर्पण केलक।”

ओना, हरजीत कक्काक सभ बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं मुदा सुनै-बुझैक जिज्ञासा मनमे जगिये चुकल अछि, अबेरक दुआरे बजलौं-

“काका, अखन जाइ छी। साँझूपहर फेर आएब।”

❑ *शब्द संख्या : 1556, तिथि : 11 जून 2019*

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

---------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020
881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020
882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020
883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020
884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020
885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020
886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020
887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020
888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020
889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020
890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020
891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020
892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020
893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020
894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020
895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020
896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020
897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020
898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020
899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020
900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020
901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020
902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020
903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020
904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020
905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020
906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020
907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes